रजत जयंती वर्ष

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5120, फरवरी 2019

मूल्य: 10/- प्रति

HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280
Date of Posting: 1st & 5th of Every Month

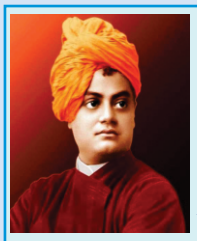

मातृवन्दना

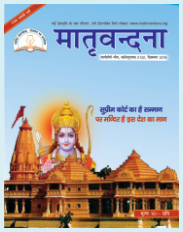

सदस्यता अभियान 2019-20

1-15 फरवरी 2019

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर नि:शुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990 **7650000990**

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

सूचना

वर्ष 2019-20 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती समारोह का समापन कार्यक्रम किया जा रहा है। इस हेतु 2019 का वर्ष प्रतिपदा विशेषांक 'राष्ट्रभाव जागरण' प्रकाशित करने की योजना बनी है। अत: लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 28 फरवरी 2019 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक या मेल द्वारा निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।

सम्पादक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:

विज्ञापन प्रबंधक: मो.न. 83510-92947

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

स्वदेशं पतितं कष्टे, दूरस्था लोकयन्ति ये,
नैव च प्रतिकुर्वन्ति, ते नराः शत्रुनन्दनाः।

जब देश संकट में हो तब जो उदासीन भाव से दूर खड़े होकर केवल देखते रहते हैं और कोई भी प्रतिकार नहीं करते, ऐसे व्यक्ति अथवा समूह, शत्रु के पक्ष के अर्थात् शत्रु ही होते हैं।

वर्ष : 19 अंक : 2

मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5120, फरवरी, 2019

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

✡

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

✡

पत्रिका प्रमुख
शांति स्वरुप

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

आस्था का महापर्व कुम्भ मेला

माघ संक्रान्ति के दिन से मकर राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही एक बार पुन: पर्वों और उत्सवों का क्रम प्रारम्भ हो जाता है। प्रकृति में व्याप्त शैत्य-भाव भी कमजोर पड़ने लग जाता है क्योंकि इसी समय सूर्य देव का उत्तर अयन में भ्रमण शुरू हो जाता है। इसी मकर संक्रान्ति से धर्म-प्राण देश की आस्था प्रधान प्रजा तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर आस्था की डुबकी के आनंद में सराबोर है। देव-दानव संघर्ष में श्रम से प्राप्त कल्याणकारी अमृत की कुछ बूंदे जिन-जिन स्थानों पर गिरी थी, कृतज्ञ पीढ़ियों ने उस अमृतत्व भाव को अकाशीय नक्षत्रों की विशेष परिस्थिति निर्मित होने पर महाकुम्भ मेला के रूप में मनाने का निश्चय किया।

सम्पादकीय	आस्था का महापर्व कुम्भ मेला	3
प्रेरक प्रसंग	आस्था ही नहीं, आमदनी का जरिया	4
चिंतन	हाल-ए-राजनीति	5
आवरण	भारत के तीन रत्न	6
संगठनम्	संपूर्ण देश को संगठित करना चाहता	10
देश-प्रदेश	सेना को मिला के-9 वज्र टैंक	12
देवभूमि	बाहरा युनिवर्सिटी के छात्रों ने बनाई	14
प्रतिक्रिया	ईवीएम हैकिंग लोकतंत्र अपहरण करने का	19
समसामयिकी	जनजातीय समाज बंधु ही भारत माता	20
काव्य जगत	माँ -'जीना सिखा दिया'	22
स्वास्थ्य	संक्रमित दवा का प्रयोग बंद	23
व्यक्तित्व	राम मंदिर निर्माण मामले में केंद्र सरकार	24
महिला जगत	महिला उद्यमिता की शक्ति की पहचान	25
कृषि जगत	कैंसर के लिए रामबाण है जापानी	26
युवापथ	देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न	27
विश्व दर्शन	सेना ने बारामूला जिला को बनाया आतंकी मुक्त	28
विविध	समाज से लुप्त होते नैतिक मूल्य नशे में डूबा युवा	30
बाल जगत	गुफा में चुप्पी छाई रही उसने फिर पुकारा	31

पाठकीय

संपादक महोदय,

आपकी पत्रिका द्वारा प्रकाशित लेख, समाचार, देश-विदेश में हो रहे सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सूचनाओं के माध्यम से पाठक इतिहास एवं वर्तमान व भविष्य कालीन घटनाओं व पर्वों से संबंधित सामग्री पढकर अभिभूत हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति में पर्वों, उत्सवों व समय-समय पर मनाए जाने वाले मेलों में जहां भारतीय संस्कृति की एकरूपता दिखाई देती है वहीं भारतीय समाज की समरसता भी प्रकट होती है। प्रस्तुत लेख में प्रयाग में हो रहे महाकुंभ के बारे में जो जानकारी प्राप्त हुई, इससे अवश्य ही भारतीयों के अतिरिक्त दूसरे भी इसके महत्व को प्रमुखता देते हैं, यूनेस्को द्वारा इस महाकुंभ के बारे में जो कहा गया है, इससे भारतीयों का सीना चौड़ा हो जाता है कि हमारी संस्कृति विश्व में महान है। आशा है इस तरह के लेखों को आप स्थान देते एवं प्रकाशित करते रहेंगे। ❖ **नारायण दत्त (नालागढ़)**

महोदय,

कुम्भ मेले का आयोजन चल रहा है। इस पर्व पर सभी साधु, संतों, महात्माओं में उल्लास पूर्ण जिज्ञासा देखने को मिलती है। कुम्भ का पर्व बारह साल बाद आता है इस मेले का इंतजार पूरा हिन्दू समाज ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के बहुत सारे देशों के लोग करते हैं। कुम्भ के मेले में जो झलक भारतीय संस्कृति की मिलती है वह एक मिसाल है, वहां पर पूजन का जो महत्व रहता है उसका सारा वृत्तांत पूरे विश्व में प्रसारित होता है कि हिन्दू संस्कृति में जो चेतना है वह किस तरह मनुष्य व अन्य जीव-जन्तुओं के कल्याण के लिए वचनबद्ध है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुरक्षा के इन्तजाम और लोगों के ठहराव के बन्दोबस्त में कोई कसर नहीं छोड़ी गई है जो एक प्रशंसनीय कार्य व संपूर्ण विश्व के लिए मिसाल है। ❖ **श्याम सिंह चौहान, शिमला**

महोदय,

आखिरकार सवर्ण आरक्षण बिल लोकसभा के साथ -साथ राज्यसभा ने भी पास कर दिया । लगभग 70 वर्षों से अटका काम मात्र दो दिन में पूरा किया । फैसला ऐतिहासिक है। सामाजिक न्याय के नाम पर स्वतन्त्रता के पश्चात् जाति के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था केवल 10 वर्ष के लिए की गई थी। तब से लेकर आज तक उसी ढर्रे पर यह व्यवस्था चलती रही। परिणाम यह हुआ कि विभिन्न जाति वर्ग ,समुदाय में स्वयं को पिछड़ा दिखाने की होड़ सी देखने को मिली। सवर्ण समाज स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहा था। अब आर्थिक आधार पर आरक्षण की शरूआत को एक क्रान्ति के रूप में देखा जा सकता है। आरक्षण व्यवस्था के अच्छे और बुरे प्रभावों को देश देख चुका है। आर्थिक आधार पर आरक्षण को सवर्ण वर्ग के लिए लाया गया है। भविष्य में आरक्षण के समूचे ढांचे के मूल्यांकन की दिशा में एक प्रभावी कदम हो सकता है। आरक्षण किसी देश की उन्नति का आधार नहीं हो सकता है। आरक्षण पर आश्रित होना किसी भी देश की कमजोरी है। प्रत्येक पांच वर्ष में नई जातियों को आरक्षण की सूची में लाने का प्रचलन रहा है। जबकि होना तो यह चाहिए कि प्रत्येक पाँच वर्ष में हमारे देश मे कोई न कोई जाति सशक्त होकर इस व्यवस्था से बाहर आती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। राजनीतिक स्वार्थ के लिए आरक्षण का उपयोग सामाजिक सदभाव को कमजोर करने के लिए किया गया है। ❖ **जोगिन्द्र ठाकुर, भल्याणी कुल्लू (हि.प्र)**

फरवरी 2019 के शुभ मुहूर्त

तिथि	नक्षत्र	विवाह मुहूर्त
01 फरवरी (शुक्रवार)	मूल	07.13 से 21:08
08 फरवरी (शुक्रवार)	उत्तरा भाद्रपद	14.59 से 23:24
09 फरवरी (शनिवार)	उत्तरा भाद्रपद, रेवती	12:25 से 31:07
10 फरवरी (रविवार)	रेवती	07:07 से 13.06
15 फरवरी (शुक्रवार)	मृगशिरा	07:03 से 20.53
21 फरवरी (गुरुवार)	उत्तरा फाल्गुनी	06.58 से 23:12
23 फरवरी (शनिवार)	स्वाति	22.47 से 30.55
24 फरवरी (रविवार)	स्वाति	06.55 से 22.03
26 फरवरी (मंगलवार)	अनुराधा	10.47 ससे 23.04
29 फरवरी (गुरुवार)	मूल	07.21 से 19.35

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को बसंत पंचमी, गुरू रविदास जयंती, छत्रपति शिवाजी व समर्थ गुरू रामदास जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (फरवरी)

मौनी अमावस्या	04 फरवरी
वसंत पंचमी	10 फरवरी
मातृ-पितृ पूजन दिवस	14 फरवरी
जया एकादशी	16 फरवरी
गुरू रविदास जयंती	19 फरवरी
छत्रपति शिवाजी जयंती	19 फरवरी
समर्थ गुरू रामदास जयंती	28 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी

आस्था का महापर्व कुम्भ मेला

जीवन की एकरसता और एकांगी दिनचर्या के उबाऊपन को दूर करने के लिए मनुष्य सरसता और आनंदानुभूति की ओर सहज ही जाना चाहता है। क्योंकि मानव मात्र ही अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रयोग अपनी अनुकूलता के लिए सबसे अच्छी तरह से कर सकता है। मनुष्य की इसी खोजी वृत्ति ने उसके जीवन को विविधवर्णी बना दिया है। जीवन की इसी विविधता में कभी नैराश्य तो कभी हर्ष के क्षण आते रहते हैं। लेकिन स्वभाव से ही मनुष्य हमेशा प्रसन्नता और मंगल का चाहवान रहा है। अत: अपनी चाह की पूर्ति के लिए उसने अनेकों उत्सवों और पर्वों की रचना की है। लेकिन भारतीय परम्परा में अनेकों पर्व और उत्सव प्रकृति की प्रेरणा और उसके कारण ही सम्भव हैं। पवित्र नदी तटों पर होने वाला महाकुम्भ एक ऐसा ही उत्सव है जो प्रकृति में होने वाली नाभिकीय घटना से ही सम्भव है।

माघ संक्रान्ति के दिन से मकर राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही एक बार पुन: पर्वों और उत्सवों का क्रम प्रारम्भ हो जाता है। प्रकृति में व्याप्त शैत्य-भाव भी कमजोर पड़ने लग जाता है क्योंकि इसी समय सूर्य देव का उत्तर अयन में भ्रमण शुरू हो जाता है। इसी मकर संक्रान्ति से धर्म-प्राण देश की आस्था प्रधान प्रजा तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर आस्था की डुबकी के आनंद में सराबोर है। देव-दानव संघर्ष में श्रम से प्राप्त कल्याणकारी अमृत की कुछ बूंदे जिन-जिन स्थानों पर गिरी थी, कृतज्ञ पीढ़ियों ने उस अमृतत्व भाव को अकाशीय नक्षत्रों की विशेष परिस्थिति निर्मित होने पर महाकुम्भ मेला के रूप में मनाने का निश्चय किया।

कलश को कुंभ कहा जाता है। कुंभ का अर्थ होता है घड़ा। इस पर्व का संबंध समुद्र मंथन के दौरान अंत में निकले अमृत कलश से जुड़ा है। देवासुर संग्राम में देवता-असुर जब अमृत कलश को एक दूसरे से छीन रह थे तब उसकी कुछ बूंदें धरती की तीन नदियों में गिरी थीं। जहां जब ये बूंदें गिरी थी उस स्थान पर तब कुंभ का आयोजन होता है। उन तीन नदियों के नाम है- गंगा, गोदावरी और क्षिप्रा। अमृत पर अधिकार को लेकर देवता और दानवों के बीच लगातार बारह दिन तक यद्ध हुआ था। जो मनुष्यों के बारह वर्ष के समान हैं। अतएव कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और आठ कुंभ देवलोक में होते हैं। अमृत कलश को स्वर्गलोक तक ले जाने में जयंत को 12 दिन लगे। देवों का एक दिन मनुष्यों के 1 वर्ष के बराबर है। इसीलिए तारों के क्रम के अनुसार हर 12वें वर्ष कुंभ पर्व विभिन्न तीर्थ स्थानों पर आयोजित किया जाता है।

पूर्वजों द्वारा स्थापित वह क्रम आज भी निर्बाध जारी है। कुम्भ का आयोजन कब और किसने शुरू किया होगा, कहा नहीं जा सकता। लेकिन सहस्राब्दियों से यह क्रम चला आ रहा है, यह हमारी संस्कृति की समृद्धता का प्रमाण है। इस बीच लगभग एक हजार वर्षों तक हम विदेशियों के शासन के अधीन रहे, उस जमाने में सुविधाओं और सूचनाओं के अभाव में भी हमारे अग्रजों ने स्थापित परम्परा को आगे ही बढ़ाया है। बिना किसी आह्वान और आग्रह के विश्व में सर्वाधिक जन-उपस्थिति वाला यह अनुपम समागम है। वैसे तो भारत माता कहा जाने वाला यह भू-खण्ड अपने आप में ही पुण्य-भूमि है लेकिन फिर भी इसके कुछ स्थान अति पवित्र और ईश्वर की साक्षात् क्रीड़ास्थली के रूप में जाने-जाते हैं। उत्तर भारत में प्रयागराज और हरिद्वार, मध्य भारत में उज्जैन तथा पश्चिमी भारत के नासिक में महाकुम्भ मेले लगते हैं। इस बार का यह महाकुम्भ मेला 14 जनवरी से शुरू होकर महाशि 4 मार्च के पवित्र स्नान के साथ सम्पन्न होता रहा है।

आस्था ही नहीं, आमदनी का जरिया भी है कुंभ

दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समागम कुंभ-2019 उत्तर प्रदेश सरकार के खजाने को भी लबालब करेगा। इस आयोजन से अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर के एक आकलन में यह बात सामने आई है। अनुमान है कि इस बार 1.2 लाख करोड़ राजस्व की प्राप्ति होगी। यह उम्मीद भारतीय उद्योग परिसंघ सीआईआई की रिपोर्ट में जताई गई है। गौरतलब है कि प्रदेश की योगी सरकार ने कुंभ मेले के लिए 42 सौ करोड़ रूपये मंजूर किए हैं। इससे पहले 2013 में जब प्रयागराज में पूर्ण कुंभ मेला लगा था, तब 13 सौ करोड़ रूपये आवंटित किए गए थे।

यूं तो कुंभ धार्मिक आस्था से जुड़ा आयोजन है, लेकिन इससे जुड़ी गतिविधियां अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करती हैं। इस बार रोजगार के हजारों अवसर पैदा हुए हैं। हॉस्पिटलिटी सैक्टर आतिथ्य क्षेत्र में ही 2.50 लाख लोगों को रोजगार मिलने का अनुमान है। इको टूरिज्म, मेडिकल टूरिज्म जैसे क्षेत्रों को भी मेले से फायदा होने का आकलन सीआईआई का है। गाइड और टैक्सी ड्राइवर के रूप में 55 हजार लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद है। वहीं, मेले से जुड़ी गतिविधियों के चलते करीब छह लाख रोजगार भी विभिन्न क्षेत्रों में सृजित हुए हैं। साथ ही स्थायी तौर के निर्माण कार्यों में हजारों कुशल अकुशल मजदूरों को भी काम मिला है।

विश्वभर में है मान: कुंभ को यूनेस्को ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर माना है। दुनियाभर में इस आयोजन की ब्रांडिंग की गई है। प्रधानमंत्री से लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी सरकार के अन्य मंत्री विभिन्न मंचों से कुंभ का बखान कर चुके हैं। आयोजन के सफल संचालन के लिए प्रयागराज मेला प्राधिकरण बनाया गया है। प्राधिकरण से जुड़े अफसरों का मानना है कि करीब 12 करोड़ श्रद्धालु 50 दिनी इस आयोजन के पांच स्नान पर्वों तक संगम और गंगा पर बनाए गए घाटों पर डुबकी लगाएंगे। पहले स्नान पर्व मकर संक्रांति पर ही 2.25 करोड़ श्रद्धालुओं के डुबकी लगाने का दावा किया गया है।

इस बार कुंभ मेला परिक्षेत्र 3200 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला है। पिछली बार यह 12 सौ हेक्टेयर क्षेत्रफल में था। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी सुविधाओं पर भी फोकस किया गया है। फ्लाईओवर, सड़कों को चौड़ा करने, आरओबी, नौ रेलवे स्टेशनों पर सुविधाओं की बेहतरी पर काम किया गया है। मेला क्षेत्र में ही 250 किमी चकर्ड प्लेट वाली सड़कें बिछाई गई हैं। साथ ही 22 पांटून पुल बनाए गए हैं। बमरौली एयरपोर्ट पर नया सिविल इन्क्लेव बनाया गया है। यहां से कई शहरों के लिए फ्लाइट भी शुरू हो गई है। सीआईआई का अनुमान है कि राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब व मप्र को भी इससे फायदा होगा, क्योंकि मेले में आए श्रद्धालु इन राज्यों में भी जाएंगे। साथ ही अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, मारीशस, जिम्बाबवे और श्रीलंका समेत अन्य देशों से भी श्रद्धालु-पर्यटक आ रहे हैं। ❖

हाल-ए-राजनीति

- हितेन्द्र शर्मा

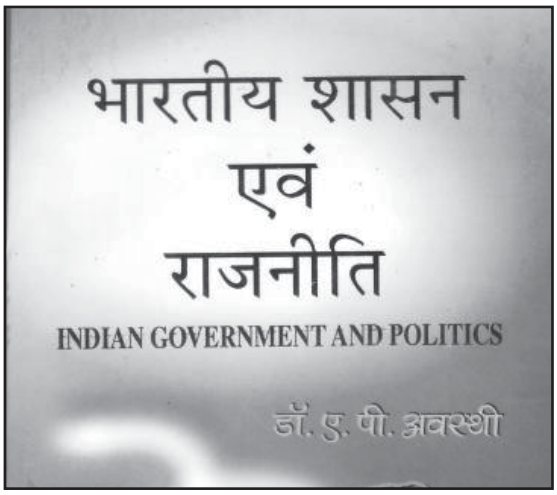

आखिर बच्चों की जिद्द के आगे धुटने टेक माता-पिता ने दिल पर पत्थर रख एक गाड़ी खरीदकर घर ले आए। एक दिन अचानक माताजी की तबीयत बिगड़ने लगी, हालात तेजी से खराब होने लगे, लेकिन बच्चों को क्या उन्हें तो गाड़ी रिवर्स करने का शौक पनपा था। बिगड़ती हालत देख पिता ने विचार किया कि क्यों न शीघ्र-अतिशीघ्र अस्पताल जाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जाए। उन्होंने बड़े बेटे को पुकारा और कहा कि चलो माँ को गाड़ी से अस्पताल ले जाने की तैयारी करो, बेटा बेशर्मी के साथ तपाक से बोला यह गाड़ी मेरी नहीं है किसी और से कहिए। फिर पिता ने दूसरे बेटे को पुकारा वह बोला मुझसे तो यह गाड़ी चलती ही नहीं, और अपना पल्ला झाड़ आगे बढ़ गया।

फिर तीसरे बेटे को पुकारा वह पूरी अकड़ के साथ बोला कि यह गाड़ी सिर्फ मेरी है मैं किसी को भी चलाने ही नहीं दूंगा और पूरी बेशर्मी के साथ गाड़ी की चाबी लेकर भाग गया। सबसे छोटा बेटा कभी माँ के मस्तक को तो कभी चरणों को सहलाता, लगातार माता की सेवा करते हुए रोता जा रहा था, अचानक से आवेश में आकर बिना पिता के परामर्श के सिर्फ माँ की खातिर यह बेटा जैसे ही दूसरी चाबी के साथ गाड़ी की तरफ बढ़ने लगा ही था.....कि उसके सभी बड़े भाई एकदम सतर्क हो गए और चुपके से जाकर षडयंत्र पूर्वक बारी-बारी गाड़ी के पहिये निकालने में जुट गए तो कोई गाड़ी की बैट्री ही निकाल गया। तर्क सिर्फ इतना कि हमारे होते यह गाड़ी चलाने वाला आखिर है कौन? यह हमारी शान के खिलाफ है हम पूरी ताकत लगा देंगे लेकिन इसे गाड़ी चलाने ही नहीं देंगे। कमोबेश हाल-ए-राजनीति भी कुछ ऐसा ही है। ❖

मद्यपान निषिद्ध गांव भटवाड़ी

-वेदराज गौतम

समुद्र तल से 5600 फुट की उंचाई पर बसा भटवाड़ी गांव जो आज से लगभग 1000 वर्ष पहले से बसा है। इस गांव की एक विशेषता है कि इस गांव में कोई भी मनुष्य शराब आदि का सेवन नहीं करता जो आज भी एक मिसाल है। भटवाड़ी गांव में तब से लेकर आज तक शराब नहीं ली जाती है और न ही वहां के लोग शराब पीते हैं न ही छूते हैं। गांव की आबादी लगभग 500 से अधिक है। जहां लगभग 100 नौजवान हैं, वहां शराब आदि का सेवन न करना वहां के देवता गणपति महाराज की ही देन है।

वहां के लोग देवता गणपति (चण्डोही)पर इतनी आस्था रखते हैं कि आज दिन तक गांव में शराब नहीं पी जाती है। वहां गणेश चतुर्थी जो कि देवता गणपति का जन्मदिन है वह महाराष्ट्र (मुम्बई)की तरह ही मनाई जाती है। देवता गणपति महाराज गणेश चतुर्थी से 10 दिन पहले भ्रमण पर निकलते हैं और ठीक 10 दिन बाद भटवाड़ी गांव में पहुंचते हैं, और उस दिन खूब बाजे-बजन्तरों के साथ देवता की रथ यात्रा निकलती है और जलेब एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर तक जाती है।

हजारों की संख्या में श्रद्धालु जलेब में सम्मिलित होते हैं। मेले में खारा जो मेले की विशेषता है, उस खारे में ही देवता की पूर्ण शक्ति विराजमान है। जिसे पुजारी बरीचन्द पीठ पर उठाते हैं और देवता के रथ को अमरू जी और अन्य पीठ पर उठाते हैं। मन्दिर में रात को जागरण किया जाता है और देवताओं के गूरों द्वारा नृत्य किया जाता है। सुबह के समय देवता के गूरों द्वारा देवता का फलादेश सुनाया जाता है। देवता के कारदार डाबेराम जी, भण्डारी रूपलाल, दर्जी टोडर, पुजारी सेसराम जो आज इस दुनिया में नहीं है वो जब देवता के रथ के साथ चलते थे, तो देवयात्रा की शान बढ़ती थी। गूर साधुराम जी जो अब100 वर्ष के पूरे हो चुके हैं, आज भी देवता के प्रति श्रद्धा से समर्पित हैं। ❖

धर्मिक आस्था का पर्व कुम्भ

भारत देश आध्यात्मिक देश है इस कारण जहां कई व्रत और त्यौहार मनाए जाते हैं। यहां धार्मिक-आध्यात्मिक आयोजन बहुत ही भव्य व आस्था के साथ मनाए जाते हैं। कुंभ मेला भी इन्ही आयोजनों में से एक है, इसमें शामिल होने के लिए देश-विदेश से कई लोग आते हैं। इस बार 2019 में कुंभ मेले का आयोजन प्रयागराज में किया जा रहा है। प्रयागराज में अर्धकुंभ 15 जनवरी 2019 से प्रारंभ होकर 04 मार्च 2019 तक चलेगा। देश के सबसे बड़े धार्मिक मेले कुंभ की परंपरा बहुत पुरानी है।

कुंभ पर्व क्यों मनाया जाता है?

कलश को कुंभ कहा जाता है। कुंभ का अर्थ होता है घड़ा। इस पर्व का संबंध समुद्र मंथन के दौरान अंत में निकले अमृत कलश से जुड़ा है। देवासुर संग्राम में देवता-असुर जब अमृत कलश को एक दूसरे से छीन रह थे तब उसकी कुछ बूंदें धरती की तीन नदियों में गिरी थीं। जहां जब ये बूंदें गिरी थी उस स्थान पर तब कुंभ का आयोजन होता है। उन तीन नदियों के नाम है- गंगा, गोदावरी और क्षिप्रा।

- अमृत पर अधिकार को लेकर देवता और दानवों के बीच लगातार बारह दिन तक यद्ध हुआ था। जो मनुष्यों के बारह वर्ष के समान हैं। अतएव कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और आठ कुंभ देवलोक में होते हैं।

- समुद्र मंथन की कथा के अनुसार कुंभ पर्व का सीधा सम्बन्ध तारों से है। अमृत कलश को स्वर्गलोक तक ले जाने में जयंत को 12 दिन लगे। देवों का एक दिन मनुष्यों के 1 वर्ष के बराबर है। इसीलिए तारों के क्रम के अनुसार हर 12वें वर्ष कुंभ पर्व विभिन्न तीर्थ स्थानों पर आयोजित किया जाता है।

- युद्ध के दौरान सूर्य, चंद्र और शनि आदि देवताओं ने कलश की रक्षा की थी, अत: उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, तब कुंभ का योग होता है और चारों पवित्र स्थलों पर प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर क्रमानुसार कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

- अर्थात अमृत की बूंदे छलकने के समय जिन राशियों में सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति की स्थिति के विशिष्ट योग के अवसर रहते हैं, वहां कुंभ पर्व का इन राशियों में गृहों के संयोग पर आयोजन होता है। इस अमृत कलश की रक्षा में सूर्य, गुरु और चन्द्रमा के विशेष प्रयत्न रहे थे। इसी कारण इन्हीं गृहों की उन विशिष्ट स्थितियों में कुंभ पर्व मनाने की परम्परा है।

- अमृत की ये बूंदें चार जगह गिरी थी:- गंगा नदी (प्रयाग, हरिद्वार), गोदावरी नदी (नासिक), क्षिप्रा नदी (उज्जैन) सभी नदियों का संबंध गंगा से है। गोदावरी को गोमती गंगा के नाम से पुकारते हैं। क्षिप्रा नदी को भी उत्तारी गंगा के नाम से जानते हैं, यहां पर गंगा गंगेश्वर की आराधना की जाती है। ब्रह्मपुराण एवं स्कंध पुराण के 2 श्लोकों के माध्यम से इसे समझा जा सकता है।

'विन्ध्यस्य दक्षिणे गंगा गौतमी सा निगद्यते उत्तरे सापि विन्ध्यस्य भगीरथ्यभिधीयते.'

'एव मुक्त्वाद गता गंगा कलया वन संस्थिता गंगेश्वेरं तु यः पश्येत स्नात्वा शिप्राम्भासि प्रिये।।'

कुंभ मेले से जुड़ी खास बातें

4 जगहों पर लगता है कुंभ

शास्त्रों के अनुसार चार विशेष स्थान हैं, जिन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। नासिक में गोदावरी नदी के तट पर, उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर, हरिद्वार और प्रयाग में गंगा नदी के तट पर।

– सबसे बड़ा मेला कुंभ 12 वर्षो के अन्तराल में लगता है और 6 वर्षो के अन्तराल में अर्द्ध कुंभ के नाम से मेले का आयोजन होता है। वर्ष 2019 में आयोजित प्रयाग में अर्द्ध कुंभ मेले का आयोजन चल रहा है।

– इसके बाद साल 2022 में हरिद्वार में कुंभ मेला होगा और साल 2025 में फिर से इलाहाबाद में कुंभ का आयोजन होगा और साल 2027 में नासिक में कुंभ मेला लगेगा।

कब से हो रहा है मेले का आयोजन

कुंभ मेले का आयोजन वैसे तो हजारों साल पहले से हो रहा है। लेकिन मेले का प्रथम लिखित प्रमाण महान बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेनसांग के लेख से मिलता है जिसमें छठवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासन में होने वाले कुंभ का प्रसंगवश वर्णन किया गया है।

प्रत्येक तीन वर्ष में आता है कुंभ

नासिक, उज्जैन, हरिद्वार और प्रयाग इन जगहों पर हर 3 साल के अंतराल में कुंभ का आयोजन होता है, इसीलिए किसी एक स्थान पर प्रत्येक 12 वर्ष बाद ही कुंभ का आयोजन होता है।

अर्धकुंभ क्या है?

अर्ध का अर्थ है आधा। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच 6 साल के अंतराल में अर्धकुंभ का आयोजन होता है। पौराणिक ग्रंथों में भी कुंभ एवं अर्ध कुंभ के आयोजन को लेकर ज्योतिषीय विश्लेषण उपलब्ध हैं।

– कुंभ पर्व हर 3 साल के अंतराल पर हरिद्वार से शुरू होता है। हरिद्वार के बाद प्रयाग, नासिक और उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाए जानें वाले कुंभ पर्व में एवं प्रयाग और नासिक में मनाए जाने वाले कुंभ पर्व के बीच में 3 सालों का अंतर होता है।

उज्जैन के कुंभ को कहते हैं सिंहस्थ

सिंहस्थ का संबंध सिंह राशि से है। सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर उज्जैन में कुंभ लगता है। इसके अलावा सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुंभ पर्व का आयोजन गोदावरी के तट पर नासिक में होता है। इसे महाकुंभ भी कहते हैं, क्योंकि यह योग 12 साल में बनता है।

कुंभ पर्व और ग्रहों का संयोग

हरिद्वार

हरिद्वार का सम्बन्ध मेष राशि से है। कुंभ राशि में बृहस्पति का प्रवेश होने पर एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर कुंभ का पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ का भी आयोजन होता है।

प्रयाग

प्रयाग कुंभ का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि यह 12 वर्षो के बाद गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम पर आयोजित किया जाता है। ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब कुंभ मेले का आयोजन प्रयाग में किया जाता है।

नासिक

12 वर्षों में एक बार सिंहस्थ कुंभ मेला नासिक एवं त्र्यम्बकेश्वर में आयोजित होता है। सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुंभ पर्व गोदावरी के तट पर नासिक में होता है।

– अमावस्या के दिन बृहस्पति, सूर्य एवं चंद्र के कर्क राशि में प्रवेश होने पर भी कुंभ पर्व गोदावरी तट पर आयोजित होता है।

उज्जैन

सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर यह पर्व उज्जैन में होता है। इसके अलावा कार्तिक अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र के साथ होने पर एवं बृहस्पति के तुला राशि में प्रवेश होने पर मोक्षदायक कुंभ उज्जैन में आयोजित होता है। ❖

भारत के तीन रत्न

-सुरेन्द्र कुमार

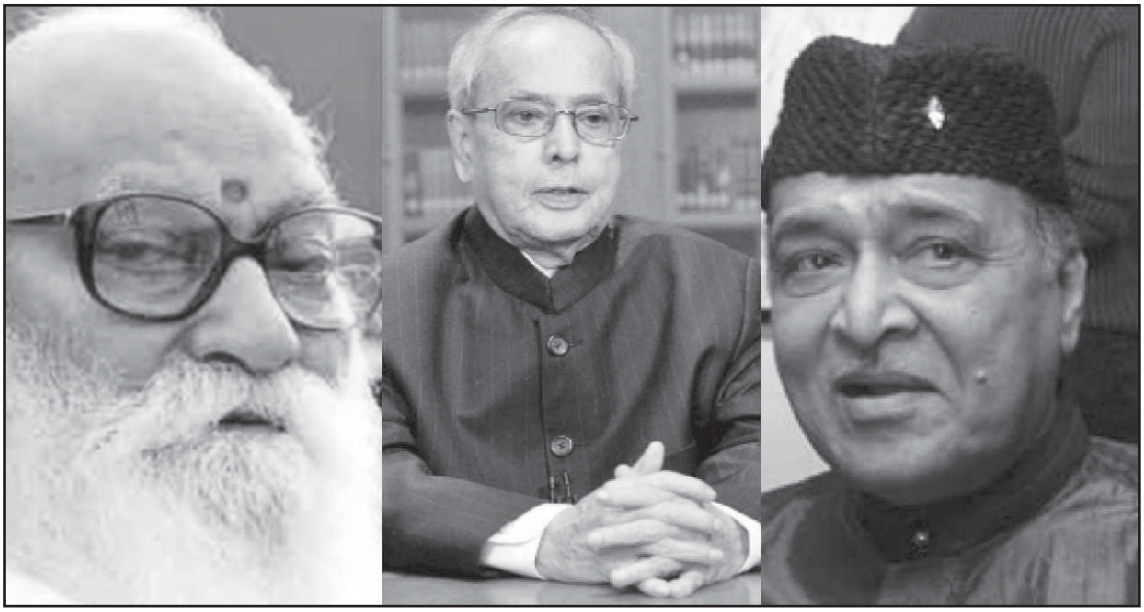

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने घोषणा की है कि देश पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, मशहूर समाजसेवी नानाजी देशमुख और प्रसिद्ध संगीतकार भूपेन हजारिका को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित करेगा। भारत के इन तीन रत्नों को यह प्रतिष्ठित सम्मान इनके द्वारा किए गए अनुकरणीय कार्यों के लिए दिया जाएगा। देश की इन महान विभूतियों ने अपने जीवन में अनेकों उतार चढ़ाव देखे परंतु इनकी नि:स्वार्थ भाव से देशभक्ति की भावना कभी कम नहीं हुई। इस कड़ी में यदि सर्वप्रथम देश के 13वें राष्ट्रपति रहे प्रणब मुखर्जी का जिक्र किया जाए तो कोई अचरज नहीं होगा। पश्चिम बंगाल के वीरभूमि जिले में 11 दिसम्बर 1935 को एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे प्रणब मुखर्जी के पिता एक पराक्रमी स्वतंत्रता सेनानी थे। इसलिए देश प्रेम बेटे प्रणब में भी कूट-कूट कर भरा था। अपने करियर की शुरुआत इन्होंने कोलकता में डिप्टी अकाउंटेंट जनरल के कार्यालय में एक साधारण लिपिक के तौर पर की। तदोपरांत इन्होंने एक निर्भीक पत्रकार के रूप में कार्य किया। इस दौरान इनका चयन स्थानीय जिला कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में हुआ। मृदुभाषी, गंभीर और कम बोलने वाले प्रणब के राजनीतिक जीवन की शुरुआत वर्ष 1969 में तब हुई जब इन्हें पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गाँधी ने राज्यसभा सदस्य चुना। उसके बाद 35 वर्षीय प्रणब मुखर्जी को उनकी दूरगामी राजनीतिक सोच के चलते 1975, 1981, 1993 और 1999 में पुन: राज्यसभा के लिए चुना। इस प्रकार इस साधारण बंगाली नेता की लोकप्रियता बढ़ने लगी तथा देशवासी इन्हें प्रणब दा के नाम से पुकारने लगे। वर्ष 1984 में वे पहली बार देश के वित्त मंत्री बने। फिर इंदिरा गाँधी की हत्या के उपरांत एक ऐसा भी दौर आया जब इन्होंने कांग्रेस छोड़ कर अपनी राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस पार्टी गठित की। प्रणब दा ने वर्ष 2004 और 2009 में लोकसभा चुनाव भी जीते। अपने राजनीतिक कार्यकाल के दौरान मुखर्जी ने भारत के वित्तमंत्री, विदेशमंत्री और रक्षामंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहकर देशवासियों की सेवा की। इसी दौरान दो बार ऐसे भी मौके आए जब प्रणब मुखर्जी प्रधानमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे थे। परंतु वक्त को यह मंजूर नहीं हुआ। इसके बाद 25 जुलाई 2012 को इनके जीवन में एक अविस्मरणीय पल आया, जब तत्कालीन मनमोहन सरकार ने इनका नाम देश

के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद के लिए चयनित किया। वह पल प्रणब दा को देश का प्रथम नागरिक बना गया। फिर 25 जनवरी 2019 की संध्या इन्हें एक और दुर्लभ खुशखबरी दे गई, जब देश के इस बेजोड़ योद्धा को सूचना मिली कि इन्हें भारत के सबसे प्रतिष्ठित सम्मान 'भारत रत्न' के लिए चुना गया है, तब इनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रणव मुखर्जी वह खुश नसीब शख्सियत हैं, जिन पर देश समय-समय पर सम्मान की वर्षा करता रहा। अब यदि भारत के दूसरे रत्न यानी स्वर्गीय भूपेन हजारिका का जिक्र किया जाए तो कहा जाएगा कि 08 सितम्बर 1926 को असम राज्य में जन्मे मशहूर संगीतकार भूपेन का मधुर संगीत सफर मात्र 12 वर्ष की छोटी उम्र से एक प्लेबैक सिंगर के रूप में हुआ। वे अपने समय के हिंदी, असमिया और बंगाली भाषाओं के प्रमुख स्तम्भ रहे। संगीतकार के साथ-साथ हजारिका एक सफल कवि, फिल्म निर्माता, लेखक, अभिनेता, चित्रकार, पत्रकार और पूर्वोत्तर संस्कृति के ज्ञाता भी रहे। उनके प्रसिद्ध गीत, गंगा बहती हो क्यों, दिल हुम-हुम करे और वैष्णव जन आदि आज भी देश में बखूबी गूंजते रहते हैं।

वर्ष 1977 में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी की सरकार ने उन्हें मंत्री पद का ऑफर दिया था पर मन में विशेष समाज सेवा की इच्छा लिए देशमुख ने पदवी को ठुकरा दिया और जीवन पर्यन्त दीन दयाल शोध संस्थान के अंतर्गत चलने वाले विविध प्रकल्पों के विस्तार हेतु कार्य करते रहे। शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण स्वावलंबन के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा गया।

वे इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन के प्रमुख सदस्यों में से एक थे। उम्दा संगीतकार होने के साथ-साथ भूपेन एक प्रशंसित व सम्मानित फिल्मकार भी थे। इसके लिए उन्हें तीन बार बेस्ट फिल्म मेकर प्रेसिडेंट नेशनल अवार्ड से नवाजा गया। उन्होंने अपने जीवन काल में पदम विभूषण, दादा साहब फालके, अनेकों क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी हासिल किए। भारतीय संगीत को विश्व पटल पर बिखेरने के लिए देश सदा उनका ऋणी रहेगा। इसी तरह देश के तीसरे रत्न अर्थात विख्यात समाजसेवी स्वर्गीय नानाजी देशमुख भी किसी पहचान के मोहताज नहीं है। उन्हें यदि ग्रामीण गरीबों का मसीह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। महाराष्ट्र राज्य के हिंगोली में 11 अक्टूबर 1916 को जन्मे नानाजी लंबे समय तक भारतीय जनसंघ से भी जुड़े रहे। इसके अलावा उन्हें अपातकाल के खिलाफ जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के शिल्पकार की संज्ञा भी दी जाती है। वर्ष 1977 में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी की सरकार ने उन्हें मंत्री पद का ऑफर दिया था पर मन में विशेष समाज सेवा की इच्छा लिए देशमुख ने पदवी को ठुकरा दिया और जीवन पर्यन्त दीन दयाल शोध संस्थान के अंतर्गत चलने वाले विविध प्रकल्पों के विस्तार हेतु कार्य करते रहे। शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण स्वावलंबन के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा गया। प्रसिद्ध सामाजिक विचारक नानाजी ने कहा था, 'हम अपने लिए नहीं, अपनों के लिए हैं तथा अपने वे हैं जो सदियों से पीड़ित एवं उपेक्षित हैं। चित्रकूट सहित देश के विभिन्न जनपदों में चल रही समग्र ग्राम विकास योजनाएँ आज भी उनकी राष्ट्र साधना की साक्षी हैं। वे जिस बात को कहते उसे कार्य रूप भी अवश्य देते थे। उनकी नि:स्वार्थ ग्राम सेवा को देश सदा याद रखेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि देश की इन तीन विभूतियों को 'भारत रत्न' प्रदान करने के सरकार के निर्णय की जितनी सराहना की जाए कम है। ❖

बनें नागरिक पत्रकार

अपने क्षेत्र की कोई विशेष जानकारी/घटना आप पाठकों से साझा करना चाहते हैं तो मातृवन्दना कार्यालय को अवश्य अवगत करवाएं। हम उसको अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

संपूर्ण देश को संगठित करना चाहता है संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रदेश का संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष सामान्य नालागढ़ के अवस्थी ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूट में 6 जनवरी से प्रारम्भ होकर 26 जनवरी को 70 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर समाप्त हुआ। इस कार्यक्रम के समापन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। वर्ग में आईपीएस अधिकारी आई.जी. (सेवानि.)प्रदीप सरपाल वर्गाधिकारी, बद्दी व परवाणु उद्योग संघ के अध्यक्ष सुबोध गुप्ता कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में रहे। वर्ग के कार्यवाह डॉ. शिवदयाल ने वर्ग का परिचय कराया। बीस दिवसीय वर्ग में हिमाचल, पंजाब, दिल्ली, जम्मू कश्मीर व हरियाणा से 361 शिक्षार्थी 70 प्रबन्धक व 49 शिक्षकों सहित 480 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

स्वयंसेवकों ने बीस दिनों में सीखे विभिन्न शारीरिक (सूर्यनमस्कार, योगासन, खेल, नि:युद्ध, दंड) कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया। इस वर्ग में निरंकारी मिशन, मानव रूहानी मिशन, मीडिया के बन्धु एवं अन्य स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं का भी सहयोग रहा।

मुख्य वक्ता अरुण कुमार ने कहा कि गणतंत्र दिवस का संदेश, हमारा कर्तव्य, त्याग, संघर्ष, इतिहास की याद कराने वाला है। प्रत्येक वर्ष संघ के 80 संघ शिक्षा वर्ग लगते हैं। इन वर्गों में लगभग 25000 शिक्षार्थी भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त संघ के 1000 प्राथमिक शिक्षा वर्ग प्रतिवर्ष लगते हैं। जिनमें एक लाख के लगभग स्वयंसेवक प्रशिक्षण लेते हैं। शिक्षण लेने के पश्चात् स्वयंसेवक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने जीविकोपार्जन के साथ समाज में सक्रिय सेवा कार्य करते हैं। संघ का विचार भारत एक राष्ट्र है, प्राचीन राष्ट्र है और हिन्दु राष्ट्र है। मेगास्थनीज, अलबरूनी व अंग्रेजों ने भी विविधता होते हुए भी भारतीय संस्कृति में एक जीवन दर्शन का चिंतन रहा ऐसा माना। कोई भी महापुरूष कहीं भी जन्मा हो उसको संपूर्ण देश में मानते हैं। गुरू गोविंद सिंह के समय पंच प्यारे देश के विभिन्न भागों से चुने गए, किसी एक स्थान के नहीं थे।। जगदगुरू शंकाराचार्य ने भी पूरे भारत को उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम में चार मठों की स्थापना कर राष्ट्र के रूप में पिरोया। दुखद है कि भारत के टुकड़े-टुकडे कर देने वाले और भारत को राष्ट्र न मानने वाले लोग भी यहां हैं। भारतीय संस्कृति एक विशेष संस्कृति है। मजहब के आधार पर राष्ट्र नहीं बनते हैं। भारत का अतीत गौरवशाली रहा है। शिक्षा में भी अपना देश अग्रणी रहा है। किसी राष्ट्र का भविष्य उसके जागरूक नागरिक और समाज पर निर्भर करता है। सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन उच्च देशभक्ति, प्रबल संगठन, दृढ अनुशासन व स्वाभिमान के आधार प्राप्त किया जा सकता है। संघ कोई बड़ा संगठन खड़ा नहीं करना चाहता वह तो देश की अंतिम पंक्ति में खड़े प्रत्येक व्यक्ति को संगठित करना चाहता है। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर के समरसता व बन्धुत्व के लिए किये गये कार्यों के बारे और उनके द्वारा देश के प्रभावी संविधान लिखने के विषय में भी बताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष सुबोध गुप्ता ने कहा कि देश में जब तक नि:स्वार्थ भाव से काम करने वाले परिश्रमी व परस्पर स्नेह करने वाले अनुशासित उद्यमी लोग रहेंगे तो देश आगे बढेगा। ऐसे समाज का निर्माण करने का काम संघ ने अपने हाथ में लिया है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को संघ से जुड़ना चाहिए। इस वर्ग में आकर मैं अपने आप को अभिभूत महसूस कर रहा हूं कि विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संस्था के कार्यक्रम में उपस्थित हुआ हूं। कार्यक्रम में उत्तर क्षेत्र प्रचारक प्रमुख रामेश्वर दास, प्रांत कार्यवाह किस्मत कुमार, प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार, प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, प्रदेश शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज, सांसद अनुराग ठाकुर, विधायक बलवीर वर्मा, नालागढ़-बद्दी के प्रशासनिक अधिकारी, बीबीएनडीए व परवाणु उद्योग क्षेत्र के उद्योगपति, विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, स्थानीय गणमान्य पुरूष व महिलाएं व मीडिया के महानुभाव भी उपस्थित रहे। ❖

संस्कृत भारती का आवासीय प्रबोधन वर्ग

उत्तर भारत में जहां कड़ाके की ठंड जोरों पर है, हाथ को हाथ न सूझता वहीं हम भारतीयों की अंग्रेजी नववर्ष को मनाने की हनक अकारण अधूरी अंधश्रद्धा भी पश्चिम के अधूरे चिंतन के समक्ष नत मस्तक है जबकि अपना नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन 06 अप्रैल 2019 को है। वहीं आंग्ल नववर्ष के प्रारम्भ होने पर संस्कृत भारती हि.प्र.द्वारा शिमला, ऊना व चामुण्डा तीन स्थानों पर पौष कृष्ण एकादशी से पौष शुक्ल षष्ठी 01 से 10 जनवरी तक दस दिवसीय आवासीय प्रबोधन वर्ग आयोजित किए गए। आश्चर्य! किन्तु एक सुखद अहसास, शिमला में प्रारम्भ हुए ऐसे ही एक वर्ग का प्रारम्भ विकासनगर स्थित हिमरश्मि सरस्वती विद्या मंदिर में मंगलवार 01जनवरी ।2019 को हुआ। उद्घाट्न सत्र में प्रदेश के संस्कृत के विशेष कार्य अधिकारी डॉ. प्रवीण कुमार विमल अध्यक्ष, प्रदेश भाषा कला संस्कृति अकादमी के सचिव डॉ. कर्म सिंह विशिष्ट अतिथि, पोर्टमोर विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेन्द्र सूद मुख्य अतिथि, संस्कृत भारती के प्रदेश संपर्क प्रमुख महेश्वर दत्त व सविमं हिमरश्मि के प्रधानाचार्य रूम सिंह सहित अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित रहे। वर्ग में 150 के लगभग सहभागी उपस्थित रहे। जहां रिज मैदान में हजारों लोग नववर्ष मना रहे थे वहीं संस्कृत भारती के अनेकों कार्यकर्ता वर्गस्थान पर उपस्थित हो वदतु संस्कृतम् जयतु भारतम् का उद्घोष कर रहे थे। ❖ **विश्व संवाद केन्द्र, शिमला**

अवैध खनन माफिया पर लगे रोक-भा.कि.सं.

भारतीय किसान संघ, जिला कांगड़ा ने एस.डी.एम. नूरपुर को एक ज्ञापन सौंपकर नूरपुर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर हो रहे अवैध खनन पर रोक लगाने की मांग की है। किसान संघ का कहना है कि प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेशों का उलंघन करते हुए कांगड़ा जिला के नूरपुर क्षेत्र के चक्की खड्ड, टिक्का पैल मौजा खन्नी ऊपरली, गुदली, चौगान और धरथाड़ा में जे.सी.बी. मशीनों द्वारा दिन-रात खनन माफिया द्वारा अवैध खनन किया जा रहा है। यह माल हिमाचल प्रदेश की खड्ड से अवैध खनन करके पंजाब के क्रैसरों पर बेचा जा रहा है। कुछ दिन पूर्व मौके पर वीडियो बनाकर एस.पी. धर्मशाला, एस.डी.एम. व डी.एस.पी. को नेटवर्क द्वारा दिखाया गया। इस अवैध खनन के चलते लोगों की पेयजल व सिंचाई योजना, खेती और यहां तक की शमशान घाट व रास्ते भी नष्ट हो गये हैं।खनन व पुलिस विभाग द्वारा भी इस मामले में आनाकानी की जा रही है। पुलिस के मौके पर मौजूद रहने की स्थिति में खनन माफिया अपनी मशीनें लेकर भाग जाते हैं और पुलिस के वापिस जाने पर दोबारा यही कार्य शुरू हो जाता है। सी.सी.टी.वी. कैमरा चोरी होने पर अवैध खनन का कार्य और अधिक जोर शोर से किया जा रहा है। भारतीय किसान संघ, जिला कांगड़ा ने खनन माफिया को रोकने के लिए एस.डी.एम. से इन क्षेत्रों में सी.सी.टी.वी. कैमरे दोबारा लगाने व खनन माफिया पर सख्त कारवाई की मांग की है। किसान संघ का कहना है कि यदि इस मामले पर जल्द कार्यवाही न की गई तो किसानों द्वारा मजबूरन धरना प्रदर्शन व भूख हड़ताल की जायेगी। ❖

कहानी संग्रह जलपाश का विमोचन

गत दिनों दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में प्रदेश की प्रसिद्ध लेखिका व साहित्यकार मृदुला श्रीवास्तव के कहानी संग्रह **'जलपाश'** का विमोचन नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष बलदेव भाई शर्मा की अनुपस्थिति में हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार महेश दर्पण के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महेश दर्पण ने कहा कि लेखिका की सबसे बड़ी पहचान उनके लेखन की मौलिकता है। उनकी कहानियों पर किसी बड़े कथाकार की छाप दिखाई नहीं देती है। सुभाष नीरव ने इस संग्रह की कहानियों को अपने तरह का एक भिन्न संग्रह बताया।

इस संग्रह में कुल आठ कहानियां हैं जिनमें समाज के शोषित वर्ग और सामाजिक जीवन की पीड़ा के ऊफनते भंवर में फंसे हाशिए के लोगों की गाथाएं तथा भ्रूण हत्या एवम् बेरोजगारी जैसे ज्वलंत मुद्दों पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कहानियां शामिल हैं। संग्रह की भूमिका में हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार गुरमीत बेदी ने इस संग्रह की कहानी पुशबैक को मंटो के चरित्र की याद दिलाने वाली कहानी बताया है वहीं वरिष्ठ कहानीकार दर्पण ने इस संग्रह को कहानीकार की कथायात्रा का महत्त्वपूर्ण पड़ाव बताया है। पश्चिम बंगाल के प्रतिष्ठित आलोचक अरुण होता ने इस संग्रह की कहानियों को लंबे समय तक याद की जाने वाली कहानियां बताया। वहीं प्रसिद्ध युवा आलोचक वैभव सिंह ने इस संग्रह की कहानियों को नई कथा दृष्टि अर्जित करने वाली बताया है।

इस अवसर पर देश के ख्यातिप्राप्त उक्त साहित्यकारों के अलावा अरुण अर्णव खरे, सुदर्शन वशिष्ठ, श्री अरविन्द तिवारी, डॉ. कांता रॉय, डॉ.कमल कुमार, डॉ. ओम निश्चल, डॉ.राजेश श्रीवास्तव, डॉ. आशीष खंडवे, महेश आलोक, सुश्री कविता मुकेश, डॉ.विनय श्रीवास्तव, डॉ. मोनिका शर्मा के अलावा आनंद भारती, अलका कौशिक, रजनी नागपाल, डॉ. पूनम वर्मा, महेन्द्र बारी, अजय श्रीवास्तव, गौतमी, विपाशा सहित अमन प्रकाशन के अरविंद बाजपेयी, ऋषभ बाजपेयी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ❖

क्या है एनआरसी

नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजंस एनआरसी में जिनके नाम नहीं होंगे उन्हें अवैध नागरिक माना जाएगा। इसमें उन भारतीय नागरिकों के नामों को शामिल किया गया है, जो 25 मार्च 1971 से पहले असम में रह रहे हैं। उसके बाद राज्य में पहुंचने वालों को बांग्लादेश वापस भेज दिया जाएगा। एनआरसी उन्हीं राज्यों में लागू होती है जहां अन्य देश के नागरिक भारत में आ जाते हैं। 1947 में जब भारत पाकिस्तान का बंटवारा हुआ तो कुछ लोग असम से पूर्वी पाकिस्तान चले गए, लेकिन उनकी जमीन असम में थी और लोगों का दोनों ओर से आना-जाना बंटवारे के बाद भी जारी रहा। इससे वहां पहले से रह रहे लोगों को परेशानियां होने लगीं। 1979 से 1985 के बीच 6 सालों तक इस समस्या को लेकर असम में एक आंदोलन भी चला। ❖

दंगे फैलाने की आई.एस.आई. की साजिश का भंडाफोड़

दिल्ली पुलिस के स्पैशल सैल एन.डी.आर. और एक इटैंलीजैंस एजैंसी ने 26 जनवरी से पहले आई.एस. आई. की एक बड़ी साजिश का भंडाफोड़ किया है। राजधानी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से 3 शार्प शूटर्स को गिरफ्तार किया गया है। ये शूटर्स गणतंत्र दिवस से पहले देश के बड़े नेताओं और केरल में संघ के कार्यकर्ताओं की हत्या कर देश में दंगे फैलाने की फिराक में थे। गिरफ्तार आतंकियों में से एक अफगान नागरिक है। सूत्रों की मानें तो प्रारंभिक पूछताछ में पकड़े गए आरोपियों ने पाकिस्तान की आई.एस.आई द्वारा उन्हें गणतंत्र दिवस से पहले दो वरिष्ठ नेताओं को मारने का काम सौंपने की बात कही है। इस ऑप्रेशन के मास्टरमाइंड की पहचान पाकिस्तान के अंडरवर्ल्ड डॉन रसूल खान 'पार्टी' के तौर पर की गई है। 2003 में मारे गए गुजरात के पूर्व गृह मंत्री हरेन पंड्या की हत्या में भी रसूल खान ही मुख्य षड्यंत्रकारी था।

शार्प शूटर्स से बरामद हुए हथियार: गिरफ्तार शूटर्स में से एक अफगानिस्तान के मजार-ए-शरीफ का रहने वाला वली मोहम्मद सैफी है। इसके अलावा शेख रियाजुद्दीन ऊर्फ राजा ऊर्फ अलामी है जो दिल्ली के मदनगीर में मकान नंबर 637, गली नं0 22, ग्राउंड फ्लोर, डी.डी.ए. फ्लैट्स में रहता है। गिरफ्तार तीसरा व्यक्ति केरल के कासरगोड का रहने वाला है और उसका नाम मुहासिम सीएम उर्फ तसलीम है। इनमें से 2 को तीन दिन पहले निजामुद्दीन के पास से हथियारों के साथ गिरफ्तार किया गया था। पुलिस को इनके पास से एक आईफोन भी मिला है, जिसकी जांच की जा रही है।

ऐसे हुआ भंडाफोड़: इस षडयंत्र की जानकारी खुफिया एजैंसियों को तब मिली जब रसूल पार्टी और दक्षिण भारत के एक व्यक्ति के बीच हुई कॉल को इंटरसैप्ट किया गया। ये लोग हथियारों के इंतजाम और दो हाईवैल्यू टारगेट की बात कर रहे थे। सूत्रों ने बताया कि इस सारे एक्शन को दिसम्बर 2018 से ट्रैक किया जा रहा था। ❖

साभार: एजेंसियां, इंट।

सेना को मिला के -9 वज्र टैंक,

19 जनवरी के दिन भारतीय सेना को मेक इन इंडिया के तहत विकसित एक शक्तिशाली टैंक की सौगात मिली है। स्वचलित तोप से सुसज्जित के- 9 वज्र नामक इस टैंक को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को समर्पित किया। सूरत के हजीरा स्थित लार्सन एंड टुब्रो एल.एंड.टी कंपनी द्वारा विकसित यह टैंक खासतौर पर रेगिस्तान इलाके के लिए डिजाइन किया गया है। टैंक 52 किलोमीटर दूर बैठे दुश्मन को तबाह करने में सक्षम है। इस टैंक पर लगी तोप चारों ओर घूमकर फायरिंग करने में सक्षम है। 2017 में एल. एंड.टी. और हानवा टेकविन की साझेदारी में इस टैंक का निर्माण शुरू हुआ था। कंपनी ऐसे 100 टैंक बनाकर देगी और इस सौदे की कुल लागत 4300 करोड़ रूपए है। यह काम 2020 तक पूरा होगा। बेहद दमदार वज्र टैंक डायरैक्ट फायरिंग में एक किलोमीटर दूरी पर बने दुश्मन के बंकर और टैंक को तबाह करने में भी सक्षम है। टैंक किसी भी मौसम और वातावरण में ऑप्रेट करने के लिए तैयार किया गया है। के-9 वज्र एक स्वचलित एंटाल्य प्रणाली से चलने वाला टैंक है। इस पर लगी तोप पहली ऐसी तोप है जिसे इंडियन प्राइवेट सैक्टर ने बनाया है।

1. 60 राऊंड बिना रूके फायर कर सकती है एक मिनट में
2. 5 लोग सवार हो सकते हैं टैंक में
3. 60 कि.मी. प्रति घंटा है रफ्तार
4. 155'39 कैलिबर की सैल्फ प्रोपैल्ड तोप लगी है टैंक पर
5. 52 किलोमीटर है टैंक पर लगी तोप की मारक क्षमता
6. 480 किलोमीटर है ऑप्रेशनल रेंज
7. 15 राऊंड गोलाबारी करने में सक्षम है 3 मिनट में। ❖

डॉ. अरूण शर्मा ने हिमाचल का नाम किया रोशन

सीवीआर एंड ईआई में डीएम डिग्री पाने वाले देश के पहले डॉक्टर बनकर अरूण शर्मा ने हिमाचल प्रदेश का नाम रोशन किया है। अरूण शर्मा देश के पहले ऐसे डॉक्टर हैं, जिन्होंने कॉर्डियो वस्कुलर रेडियोजॉजी एवं एंडोवस्कुलर इंटरवेंशन(CVR)अत्यधिक विशेषता की डीएम की डिग्री पाई है। हिमाचल प्रदेश के डॉक्टर पूरे देश में पहले भी अपना अहम योगदान दे रहे हैं। लेकिन इस कड़ी में एक ऐसा नाम जुड़ा है। जिसने पूरे देश व प्रदेश का नाम रोशन कर दिया है। हिमाचल के बेटे जिला बिलासपपुर से संबंध रखने वाले व हमीरपुर में रहने वाले हैं डॉ. अरूण शर्मा। इन्होंने सबसे कम उम्र में चिकित्सा क्षेत्र की रेडियोलॉजी विभाग में सबसे ऊंचा मुकाम हासिल कर लिया है। डॉ0 अरूण शर्मा देश के पहले ऐसे डॉक्टर हैं। जिन्होंने कार्डियो वस्कुलर रेडियोलॉजी एवं एंडोवस्कुलर इंटरवेंशन(बीबीआर एंड ईआई) सुपर स्पेशलाइज्ड डीएम डिग्री पाई है।

डॉ. अरूण शर्मा हिमाचल प्रदेश के जिला बिलससपपु की तहसील घुमारवीं के एक छोटे से गांव बल्ह फटोह से संबंध रखते हैं। प्रार्भिक शिक्षा माध्यमिक विद्यालय हमीरपुर से हुई । जिन्होंने 10 प्लस टू की कक्षा में भी यहां से प्रथम स्थान में हासिल की। उनके पिता दीनानाथ शर्मा भारतीय स्टेट बैंक से उप प्रबंधक पद से सेवानिवृत्त हैं। उनकी माता एक साधारण गृहणी और समाज सेवी हैं। अरूण शर्मा ने पहले साल में पीएमटी की परीक्षा पास कर इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान महावद्यिालय से एमबीबीएस की डिग्री 2005 में हासिल की थी। उसके बाद उन्होंने कुछ समय के लिए जिला हमीरपपु में अपनी स्वास्थ्य सेवा दीं। उसके उपरांत वर्ष 2009 में पीजीआई चंडीगढ़ में रेडियोलॉजी विभाग में डीएम डिग्री के लिए परीक्षा पास की। ❖

बाहरा यूनिवर्सिटी के छात्रों ने बनाई हैमर कार

सोलन जिला के वाकनाघाट स्थित बाहरा यनिवर्सिटी के मैकेनिकल और ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के छात्रों की टीम ने हिमाचल जैसे पहाड़ी प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए हैमर नाम की एक कार तैयार की है। सड़क पर वाहनों की बढ़ती संख्या के साथ-2 एंबुलेंस, फायर ट्रक जैसे जरूरी वाहन कभी-कभी देरी का सामना करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप जीवन की हानि या संपत्ति को गंभीर नुकसान हो सकता है। ऐसी स्थिति में यह कार उपयोगी साबित होगी।

हैमर नाम की इस कार को आवश्यक उपकरणों के साथ लैस करने पर एक आपातकालीन वाहन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। बाहरा यूनिवर्सिटी के वीसी डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि इस कार को विशेषत: बहुद्देशीय वाहन जैसे कि एंबुलेंस या फायर वाहन के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि अन्य वाहनों के स्पेयर पार्ट्स से निर्मित इस कार को बनाने में तकरीबन 40,000 रूपये की लागत आई है। उन्होंने कहा कि यही तीन पहियों वाली कार है, जिससे आपात स्थितियों में फंसे लोगों व मरीजों के बचाव में मदद मिलेगी।

वह उपभोक्ताओं को बाइक की कीमत पर यह कार प्रदान करना चाहते हैं, जो दोपहिया वाहन की तुलना में अधिक विश्वसनीय और सुरक्षित होगी। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग के छात्र तुषार गुप्ता, हर्षित शर्मा, रविंदर परिहार, विक्रम नेगी व अमन ठाकुर की टीम ने बाहरा यूनिवर्सिटी की वर्कशॉप में 400 घंटों की कड़ी मेहनत से इस कार का निर्माण किया। तुषार गुप्ता ने साझा किया कि मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विकास उचारिया, एसिस्टेंट प्रोफेसर प्रशांत चौधरी व रूपेंद्र कंवर ने समय-समय पर इन छात्रों का मार्गदर्शन किया। कार में लगने वांले भागों से लेकर डिजाइनिंग व अर्गोनोमिक्स तक में उनका छात्रों को पूरा सहयोग रहा। ❖ **साभार: पंजाब केसरी**

Admission open (English Medium)

SARSWATI VIDYA MANDIR
SENIOR SECONDARY SCHOOL
HIM RASHMI PARISAR, VIKAS NAGAR, SHIMLA

CBSE Affiliated

Affiliated to:
Central Board of Secondary Education (CBSE) Delhi
(Regd. No. : C-23012)

Mr. Raman Veer H.A.S. (Hostler) Honoured By Sanghathan Mantri Mr. Tilak Raj

Entrance Exam 17th Feb. 11.00 AM

Achievements and Prospect

- Annual result of the hostel is 100%.
- Ex-hostlers are working as many, NDA, HAS, Doctors, Engineers etc.
- Selections of many hostlers in National games level.
- Special training for all over development.
- Educational and other tours are organised.
- Spiritual development of the students through yog & pranayam.
- Mind mapping and coaching according to choice & interest.
- Declamation, Debate, Speech competition, Writing competition, Cultural program & Quiz Competition on every Saturday of the month.

Group photo of State physical teachers with office bearers of Himachal Shiksha Samiti.

PARTICIPATION OF HOSTEL STUDENTS IN DIFFERENT ACTIVITIES

Contact : Mobile: 94597-97890, 70189-22553, E-mail : svmhimrashmi@gmail.com Website: www.svmhimrashmi.org

With Best Compliments from:

प्रवेश प्रारम्भ

अनिला महाजन सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक

आवासीय विद्यालय मनाली

(हिमाचल शिक्षा समिति शिमला द्वारा संचालित तथा विद्या भारती दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त हि.प्र. स्कूल शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्रवेश:

कक्षा नर्सरी से चतुर्थ: 1 जनवरी 2019 से 28 फरवरी 2019 तक
कक्षा पंचम से (10+1) : 1 अप्रैल 2019 से 6 अप्रैल 2019 तक
हॉस्टल: 1 फरवरी 2019 से।

नियमित कक्षाएं:

नर्सरी से चौथी तक 1 फरवरी 2019 से तथा कक्षा पंचम से (10+2) तक 7 अप्रैल 2019 से आरम्भ अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-

प्रधानाचार्य: 94599-46141, कार्यालय: 01902-253777

With Best Compliments from:

A School with a difference

SARASWATI VIDYA MANDIR

Affiliated to H.P. School Education Board Dharamshala. (Affiliation No.: 26021)

प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2019-20

नर्सरी कक्षा से नवम कक्षा तक प्रवेश: 1 फरवरी से मात्र कुछ सीटें

नियमित कक्षाएं 19 फरवरी से प्रारम्भ

10+1 तथा *10+2* कक्षा में 02 अप्रैल से मात्र कुछ सीटें

10+1 तथा *10+2* कक्षा 16 अप्रैल से प्रारम्भ

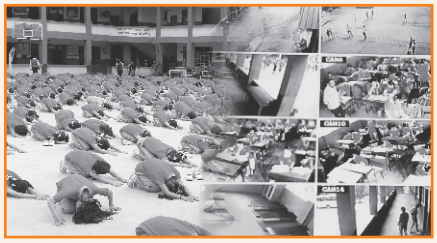

Senior Secondary School Samoli (Rohru) Nursery to (10+2 Science), (Recognised)

Ph.: 01781-241623 Mob.: 98573-71887, 94592-71887

www.rohru.svmschools.org YOUTUBE चैनल को Subscribe करें *Samoli126@gmail.com*

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.net.in

Surya Foundation is a renowned organisation for imparting training to the youth for their all-round development. We require the following categories of dedicated & diligent youth (boys & girls) brought up in a sound **SANGH / SAMITI** culture with impeccable character and devotion to social work for entry in **SURYA FOUNDATION**. Candidates will be put through an interview process prior to their selection.
Posting will be given after successful completion of 3 months initial training at Surya Training Campus followed by one year On Job Training (OJT).

Post	Experience	Initial Training + OJT	After Training CTC
CA	IPCC / Inter	3 - 3.5 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	- do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	4.5 - 5 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D.* *	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -

- More deserving candidates of above categories may get higher salary.
* Ph.D. salary will be decided during the interview.

Application Form

(Apply on a separate sheet of paper)

Affix latest Photograph here

Post Applied For _____
Full Name (In Capital) _____ Date of Birth _____ Caste _____ Married / Single ___
Father's Name _____ Father's Occupation _____ Monthly Income _____
Brothers (Excluding Self) _____ Sisters _____
Educational Qualification_____ (Attach Photocopy of Marksheet)
Have you attended NCC/NSS/OTC/ITC/Sheet Shivir? Give Details of location of Camp and dates _____
Were you associated with Seva Bharati / Vidya Bharati / Vanvasi Kalyan Ashram / Any other Sangh Project? Give details
_____
Is anyone known to you in Surya Group? Give his name and department _____
Have you ever been interviewed in Surya Foundation earlier? If yes, give Year & Cadre for which interviewed._____
Give details of any special achievements, qualifications etc.
Address for Correspondence _____ Pincode _____ Phone No. ____ Mobile _____ Email _____
Apply with detailed CV along with the application at the following address or Email : suryainterview@gmail.com.

Surya Foundation : B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063

Apply within two months of the publication of the advertisement

Sarvhitkari Shiksha Niketan

(Arise ! Awake ! and stop not till the goal is achieved)

A Culture Oriented English Medium
Boy's Residential & Co-education for Day Scholars'
(Affiliated to C.B.S.E., New Delhi)
Barog bye-pass Road, Kumarhatti Distt. Solan (H.P.) -173229
(A Unit of VIDYA BHARATI) Run by : Himachal Shiksha Samiti, Shimla

Managed by :
Jindal Charitable Trust, NABHA (Pb.)

Registration /Admission Open for Classes Nursery to X.

LOCATION

The complex is situated on Barog bye-pass Road, Kumarhatti. It is less than 2 Km. from Kumarhatti and is about 55 Km, from Chandigarh.

O.P. JINDAL (Chairman)

OUR AIM

IS TO PROMOTE A national Education System which will develop generation of young men and women who will have complete faith in Hindu values and ideals, who will be National to the core, be fully developed from the Physical, Mental, Intellectual and Spiritual angles.

PROGRAMMES

- An educational philosophy commensurate with Bharatiya Sanskriti;
- To pass over the National heritage of invaluable spiritual wealth to coming generation;
- Special emphasis on Physical Education, Yoga, Music, Sanskrit Moral and Spiritual Education.

J.K. Sharma (Principal)

Phone : 98161-49253, 98163-47802, 98571-20062, 094185-58030

ईवीएम हैकिंग लोकतंत्र अपहरण करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र

-पुष्कर अवस्थी

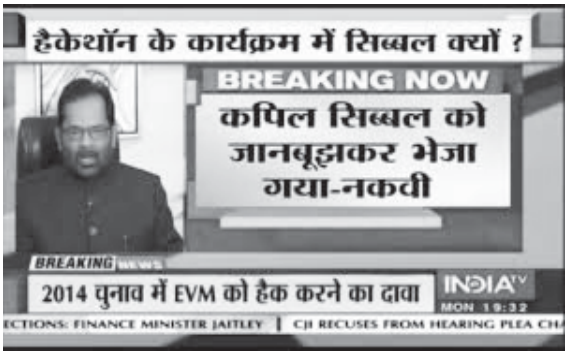

लंदन में अमेरिका का एक हैकर, जिसने अपनी पहचान छुपा रक्खी थी, ने प्रेस कॉन्फ्रैंस में अतर्कसंगत घोषणा की कि भारत के 2014 के चुनाव में ईवीएम को हैक किया गया था और ईवीएम मशीन हैक की जा सकती है। इतना बड़ा आरोप लगाने वाले ने अपनी बात की पुष्टि के लिए न कोई साक्ष्य प्रस्तुत किये हैं और न ही कोई साक्ष्य देने की बात कही है। यह सिर्फ और सिर्फ लांछन लगाने के लिए किया गया आरोप है। मेरे लिए यह कुछ नही हैं। यह भारत मे 2019 के लोकसभा चुनाव को प्रभावित करने के लिए सिर्फ कांग्रेस का अंतर्राष्ट्रीय स्तर का, विदेश की भूमि पर रचा हुआ एक और षड्यंत्र है। कैम्ब्रिज अनेलिटिकल के बाद विदेश की भूमि से कांग्रेस का यह एक और कुटिल प्रयास है। इस बार कांग्रेस ने, पर्दे में छिपी एक आवाज का सहारा, इस आशा से लिया है कि इस प्रयास से भारत मे ईवीएम को लेकर लोगों मे संदेह का बीजारोपण हो जाएगा। मैं इस तथाकथित हैकर के पीछे कांग्रेस का हाथ इस लिए कह रहा हूँ क्योंकि वहां कपिल सिब्बल और द वायर के पत्रकार पहुंचे थे और यह प्रेस कांफ्रेन्स पूरी तरह प्रयोजित थी।

जब से कांग्रेस 2014 में सत्ता से बाहर हुई है तभी से ईवीएम से छेड़छाड़ को लेकर सबसे ज्यादा बात कांग्रेस ने की है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बिना बेईमानी किये, नरेंद्र मोदी की सरकार को नहीं हरा सकते हैं। वे जानते है कि मोदी जी का फिर से प्रधानमंत्री बन कर आना न सिर्फ उनका अस्तित्व समाप्त करेगा बल्कि उनके ईकोसिस्टम भी नष्ट हो जाएगा। उन्हें यह ईवीएम अपने रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा लग रहा है। यह ईवीएम ही वो अस्त्र है जो राहुल गांधी की कांग्रेस को बेईमानी से लोकतंत्र का अपहरण करने से रोक रही है। कांग्रेस का उद्देश्य यही है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत, उसके इलेक्शन कमीशन व चुनाव में उपयोग होने वाली ईवीएम को इतना कलंकित कर दिया जाय कि भारत की सत्यपरायण, आदर्शवादी जनता के मन मे संदेह पैदा हो जाये और फिर सर्वोच्च न्यायालय में बैठे उनके पीडी के सहारे, चुनाव में ईवीएम के प्रयोग पर रोक लगवा दी जाए। जिससे कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों का प्रिय रहा बैलट बॉक्स एक बार फिर 2019 के चुनाव में प्रयोग किया जाय और बाहुबल के आधार पर उसमें पड़ने वाले मतों का अपहरण किया जा सके। यदि लोग यह सोच रहे हैं कि यह सिर्फ कांग्रेस का ही षड्यंत्र है तो यह गलत है। यह भारत की बढ़ती शक्ति व आर्थिक रूप से स्वावलंबी होते भारत को घुटने पर फिर बैठाने का एक अंतर्राष्ट्रीय षडयंत्र है। मुझे इस बात पर कोई भी संदेह नही है कि कांग्रेस ने सत्ता में फिर से वापस आने के लिए भारत का सौदा इन शक्तियों से कर लिया है। यह पाकिस्तान, चीन या युद्ध सामग्री बनाने वाली कम्पनियां भी हो सकती हैं। भारत निस्संदेह एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां, स्वार्थ का बोलबाला है। आज जब यह बारबार सिद्ध हो चुका है कि भारत के हिंदुओं की संवेदनशीलता व उनमें दूरदृष्टि का अभाव उनको स्वार्थी बनाते है और वे आज के लिए अपने ही कल की हत्या बारबार करते है, तब यह अंतर्राष्ट्रीय मकड़जाल और भी भयावह है।

मेरा मित्रों से यही आग्रह है कि यह संधिकाल है। यह काल अर्जुन की दुविधा का काल नहीं है। यह एक युद्ध है और हमारे लिए सिर्फ नेतृत्व का आंख बंद कर भरोसा करके अपने शत्रुओं का संहार करने का काल है। यह जो आज हुआ है, इससे भी बड़े बड़े अभी और आक्रमण होंगे और ये आपके विश्वास को लड़खड़ाने का प्रयास करेंगे। यहां आप यह याद रखिये की इन द्रोहियों को यह अच्छी तरह पता है कि आपके होते कांग्रेस या कोई भी गठबंधन उनको जीतने नहीं देगा इसलिये वे आपके विश्वास व मन से खेलेंगे। वे आपको युद्ध भूमि से दूर दुविधा, संशय व हीनता के जगत में ले जाना चाहते है। वो षडयंत्र करते रहेंगे लेकिन आप उनका प्रतिघात करते रहिये क्योंकि जहां सिर्फ भारत के अस्तित्व का भविष्य तय करेगा वही भारत के हिंदुओं की अगली पीढ़ी श्राद्ध करने वाली होगी कि नही, यह भी तय करेगा। ❖

जनजातीय समाज बंधु ही भारत माता के सच्चे सपूत

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष नंदकुमार साय ने कहा कि समस्त समाज जीवन एवं विश्वभर का मानवीय जीवन अत्यधिक समस्याओं और अंतर्विरोधों से ग्रसित है। यदि सुख, समृद्धि, शांति, सुरक्षा, पर्यावरण आदि की बात की जाए तो जनजातीय समाज बंधु ही भारत माता के सच्चे सपूत हैं। वे महाराष्ट्र के नंदुरबार में आयोजित जनजाति चेतना परिषद के समापन समारोह के अवसर पर कह। उन्होंने जनजातीय समाज की भूमिका को स्पष्ट किया। कहा कि जनजाति परंपराओं का पालन करने से पर्यावरण सहित पृथ्वी एवं मानव जाति का अपने आप संरक्षण होता है। धर्म का अर्थ विशेषज्ञों व जानकारों ने कितने सुंदर व सटीक शब्दों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि धैर्य, क्षमा, त्याग, चोरी व धोखाधड़ी ना करना, इंद्रियों पर नियंत्रण, वीरता, विद्या, सत्य आदि प्रकार के 10 गुणों का आत्मसात करना ही धर्म होता है।

उन्होंने कहा कि शासकीय व प्राथमिक विद्यालयों के प्रति अनास्था यह सभी समाज के विद्यार्थियों के लिए हानिकारक है। जिसे त्वरित खत्म करना चाहिए। जनजाति समाज के विद्यार्थियों में अच्छे क्रीड़ा कौशल्य गुणों का विकास हो सके, इसके लिए प्रयास करना चाहिए। ताकि वह देश का गौरव स्थापित कर सके। ऐसे में धर्मांतरण व अन्य अप्रिय घटनाओं को भी रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि जनजाति समाज के अनेक भूखंड, जमीन हड़प ली गई है। वह किसी भी हालत में उन्हें वापस दिलानी है। उनके उत्थान के लिए संपूर्ण समाज का सहयोग करना होगा। भोले भाले जनजातीय समाज को धर्मांतरण करने वालीं व नक्सली ताकतों से दूर रखने के लिए सतर्कता बरतना आवश्यक है। तभी सारा देश एवं सीमाएं भी सुरक्षित रह सकेंगी।

दूसरे सत्र में सामूहिक गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। जनजाति समाज के प्रेरणास्पद व्यक्तियों का सम्मान भी किया गया। जिसके अंतर्गत पारंपरिक कला संचयन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए चयनित लोगों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र में नागपुर की निलिमाताई पट्टे (नागपुर) ने आदिवासी संस्कृति की स्त्री को संस्कारित होने का दावा करते हुए उदाहरण प्रस्तुत किए। समाज में व्यापक बदलाव के लिए वनवासी संस्कृति की महिलाओं का समावेश होना चाहिए। जनजाति चेतना परिषद के सचिव डॉ. विशाल वलवी ने बताया कि 1995 से नकली आदिवासी के रूप में एक बहुत बड़ी बीमारी सामने आई है। डॉ. वलवी ने उदाहरण व साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि बेग, कोलम, अन्सारी आदि प्रकार के नकली जाति प्रमाण पत्र उपलब्ध कराए गए हैं।

उन्होंने कहा कि कुल 47 जनजाति होते हुए आज 84 जनजातियां किस प्रकार से हो गईं? नकली जाति प्रमाण-पत्र पर कार्रवाई की लटकती तलवार देखकर संबंधित लाभार्थियों ने किस प्रकार से एक करोड़ 07 लाख रुपए दंड भरा, इसका उदाहरण भी दिया। उच्चतम न्यायालय ने 4500 नकली आदिवासी नौकरी धारकों को निलंबित करने का आदेश भी दिया है। इस प्रकार की ठगी व धोखाधड़ी टालने के लिए शासन को कठोर निर्णय लेने चाहिये। ❖

फूलों की बगिया से खिले युवा

खेती की बजाय इन्होंने फूलों की खेती की ओर बल दिया है। बेरोजगारी के दौर में नौकरी की आस लगाने की बजाय कई युवाओं ने फूलों की खेती कर स्वरोजगार पाया है। सराज क्षेत्र के मुराहग निवासी मनोज कुमार भी फूलों की खेती कर एक सफल किसान बन चुके हैं। उनकी प्रेरणा से पूरे गांव के युवा फूलों की खेती की ओर प्रेरित होकर आर्थिकी सुदृढ़ कर रहे हैं। मनोज कुमार इसमें अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। उन्होंने बताया दस साल से आलू, गोभी, टमाटर,खीरा और धनिया आदि फसलों की खेती कर रहा था, इसमें मुझे कुछ खास मुनाफा नहीं हो रहा था। पांच वर्ष पहले मुझे कृषि विभाग की ओर से पॉलीहाउस में फूलों की खेती करने की जानकारी मिली। इसके बाद फूलों की खेती करना शुरू किया है और इससे काफी आर्थिकी सुधरी है। वर्तमान में पॉलीहाउस में कारनेशन फूल की विभिन्न किस्मों की खेती कर रहे हैं।

मनोज कुमार बासा कॉलेज से बीए हैं। उनके इस काम में उनकी पत्नी और बच्चे भी हाथ बंटाते हैं। मनोज ने अपने व्यवसाय को अपने तक सीमित न रखकर गांव के अन्य युवाओं को भी इसके लिए प्रेरित किया। उनकी प्रेरणा से आज पूरे गांव के युवाओं ने गांव में पॉलीहाउस लगाकर फूलों के कारोबार से जुड़ गए हैं। उनके फूल सराज से सीधे दिल्ली की मंडियों में भेजे जाते हैं और काफी मुनाफा कमाने लगे हैं। बकौल मनोज कुमार, आमतौर पर वह और गांव के सभी युवा कारनेशन फूल की खेती कर रहे हैं। सराज की जलवायु के अनुसार फूलों की पैदावार अधिक होती है। फूलों की खेती युवा किसानों के लिए कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमाने का अच्छा विकल्प है। ❖

सरकारी कॉलेजों में शुरू होगी भाषा प्रयोगशाला

अब प्रदेश का युवा संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में निपुण बनेगा। देश की विरासत को सहेजने की बात हो या विदेश में नौकरी व पढ़ाई के लिए जाने वाले युवाओं को अंग्रेजी भाषा बोलने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। प्रदेश शिक्षा विभाग ने युवाओं को संस्कृत से रूबरू करने और फर्राटेदार अंग्रेजी सिखाने के लिए नई योजना तैयार की है। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में जमा एक व जमा दो कक्षा और करीब 50 कॉलेजों में भाषा प्रयोगशाला शुरू की जाएगी। प्रयोगशाला में युवाओं को अंग्रेजी और संस्कृत भाषा का ज्ञान और उसे बोलना सिखाया जाएगा। उच्चतर शिक्षा निदेशालय ने इन योजनाओं पर प्रस्ताव तैयार किया है। इसमें 50 कॉलेजों में अंग्रेजी और संस्कृत भाषा प्रयोगशाला शुरू करने के प्रस्ताव को प्रदेश सरकार से मंजूरी मांगी है। यदि प्रदेश सरकार से इस योजनाओं को मंजूरी मिलती है तो कॉलेजों और स्कूल स्तर पर भाषा प्रयोगशाला शुरू करने वाला हिमाचल पहला राज्य बन जाएगा। विभागीय सूत्रों की मानें तो भाषा प्रयोगशाला को अगले शैक्षणिक सत्र से शुरू करने की तैयारी की जा रही है।

ऐसे काम करेगी भाषा प्रयोगशाला: भाषा प्रयोगशाला में संस्कृत और अंग्रेजी बोलना सिखाया जाएगा। विद्यार्थियों को बताया जाएगा कि विदेशों में किस तरह से अंग्रेजी बोली जाती है। उसे प्रेक्टिकल कर दिखाया जाएगा और विद्यार्थियों से बुलवाया भी जाएगा। इस तरह से वह अंग्रेजी बोलने में पूरी तरह से निपुण बनेंगे। इसी प्रकार संस्कृत भाषा के शब्दों का ज्ञान दिया जाएगा। इस भाषा के शब्दों को प्रशिक्षक बोल-बोल कर सिखाएगा।

अभी अलग से करना पड़ता है कोर्स: प्रदेश के सरकारी स्कूलों और कॉलेजों से पढ़ाई करने के बाद युवाओं को तभी विदेशों में नौकरी के लिए जाने की अनुमति मिलती है जब उन्होंने आइलेट की परीक्षा पास की है। इसके लिए युवाओं को अलग से कोर्स करना पड़ता है। इसके लिए जेब भी ढीली करनी पड़ती है। ऐसे कॉलेजों और जमा एक और जमा दो कक्षा के लिए शुरू की जाने वाली भाषा प्रयोगशाला से काफी लाभ होगा। ❖

माँ - 'जीना सिखा दिया'

कष्ट और विपत्ति जिसके जीवन की सम्पत्ति
मेहनत के पसीने ने जीवन पथ सजा दिया
माँ तूने संसार दिखा दिया हमें जीना सिखा दिया।
बचपन में सादगी भरा हमारे बालों को बनाना
माथे पर प्यार से काला टीका लगाना
तेरे इसी विश्वास ने जमाने की बुराईयों से बचा लिया
माँ हमें जीना सिखा दिया।
हमेशा मुस्कुराना शान्त रहने को कहना
विपरीत परिस्थितियों में चमकता तेरा ये गहना
मानवता का अनूठा पाठ पढ़ा गया
माँ हमें जीना सिखा दिया।
मेहनत का फल है मीठा
कछुए की चाल ने भी जीतना सीखा
स्वाबलम्बन का ये मंत्र
कामयाबी की राह दिखा गया
माँ हमें जीना सिखा दिया।
रिश्तों में बढ़ती कड़वाहट
स्वार्थी मन की झुंझलाहट
त्याग भरी तेरी मुस्कुराहट
क्या अपने क्या पराये
सब को गले लगा लिया
माँ हमें जीना सिखा दिया।
याद है बचपन से विदाई तक का सफर
कैसे तूने अपने लहू को पसीना बना दिया
माँ हमें जीना सिखा दिया।
प्रतिभा नहीं ये एक संघर्ष निरन्तर है जिज्ञासा
माँ के चरणों में रहूं समर्पित एक है अभिलाषा
कुछ आपके स्नेह ने यूँ बाहुपाश में बांध लिया
माँ हमें जीना सिखा दिया।

- हितेन्द्र शर्मा
संयोजक - मंथन साहित्य मंच कुमारसैन,

तंत्र तो है गणतंत्र

चयनित गणाध्यक्ष।
पर राष्ट्र के समक्ष,
अनवरत षडयंत्र,
और खड़े प्रश्न यक्ष।
अनवरत सांस्कृतिक बहाव
अविरल सरस्वती का प्रवाह,
पुनः फूटे।
एक हो सभी समाज
में, जो हो रूठे।।

संस्कृति गंगा की भी अन्यथा,
होगी वही व्यथा।
बस मिथकों में ही रहेगी,
सरस्वती की ही तरह अदृश्य बहेगी।।
वृत्रासुर यदि रोकता हो धार।
उठाओ वज्र, करो प्रहार।।
देने राम को वनवास,
कैकेईयाँ गयी कोप कक्ष।
शिव का न हो अपमान,

जान ले सारे दक्ष।
पार्थ नहीं किंकर्तव्यविमूढ़ अब,
कृष्ण रख रहें हैं पक्ष।
तंत्र तो है गणतंत्र,
चयनित गणाध्यक्ष।
पर राष्ट्र के समक्ष,
अनवरत षडयंत्र,
और खड़े प्रश्न यक्ष।।

हरीश कुमार
खोहद्वार

शान्ति

बहन जब ननिहाल जाती
घर में तब शान्ति छा जाती,
माँ जब हमें पढ़ाती
हम में भी शान्ति आ जाती,

टीचर जब कक्षा में आती
सन्नाटा और शान्ति भी लाती।
सम्मान बड़ों का प्यार हम बच्चों पर
लाती

समाज में भी अगर शान्ति आ जाती,
खूबसूरती भारत माता की बढ़ जाती
सरहद पर भी अगर शान्ति छा जाती।।

' - युविका शर्मा (उम्र 8 वर्ष) तह. कुमारसैन, जिला शिमला (हि.प्र.)

संक्रमित दवा का प्रयोग बंद

उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना में पोलियो की खुराक के कुछ बैच में संक्रमण पाये जाने की खबरों के बीच केन्द्र सरकार ने गुरुवार को देशभर के पैरंट्स से अनुरोध किया कि वे अपने बच्चों को पोलियों की दवा जरूर पिलाएं।

गौरतलब है कि पोलियो विषाणु टाइप 2 पूरी दुनिया से खत्म हो चुका है। बयान में कहा गया है कि जिस उत्पादक की दवा में संक्रमण मिला था, उसकी दवाओं का प्रयोग बंद कर दिया गया है और उसने सार..:

बच्चों को दिए जाने वाले सभी टीके सुरक्षित हैं

आधिकारिक बयान के अनुसार, स्वास्थ्य मंत्रालय का कहना है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO के साथ मिलकर सरकार ने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया है कि बच्चों को दिए जाने वाले सभी टीके सुरक्षित और प्रभावी हों। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना में पोलियो की खुराक के कुछ बैच में पोलियो विषाणु टाइप 2 का संक्रमण मिलने के बाद उपजी चिंताओं के बीच यह बयान जारी किया गया है।

संक्रमित दवा का प्रयोग बंद

गौरतलब है कि पोलियो विषाणु टाइप 2 पूरी दुनिया से खत्म हो चुका है। बयान में कहा गया है कि जिस उत्पादक की दवा में संक्रमण मिला था, उसकी दवाओं का प्रयोग बंद कर दिया गया है और उसने सारा स्टॉक वापस ले लिया है। बयान में कहा गया है कि अन्य निर्माता भी हैं जो पोलियो की खुराक मुहैया कराते हैं। अन्य निर्माताओं की दवाओं का परीक्षण किया गया है और पुष्टि की गई है कि वे सभी मानकों पर खरे उतरे हैं।

दरअसल, राजधानी दिल्ली से सटे गाजियाबाद स्थित मेडिकल कंपनी बायोमेड द्वारा बनाई गई ओरल पोलियो वैक्सीन में टाइप-2 पोलियो के वायरस पाए गए थे। देश को पोलियो मुक्त घोषित किए जाने के बाद से सालभर में केवल 4 बार ही मॉप-अप राउंड चलाया जाता है। इस साल जनवरी, मार्च और अगस्त में 3 मॉप-अप राउंड हो चुके हैं। अब नवंबर के अंत में आखिरी राउंड होना है। ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि मार्च और अगस्त के मॉप-अप राउंड में टाइप 2 पोलियो के वायरस वाली दवा का प्रयोग कई जगहों पर हुआ है। ❖

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

राम मंदिर निर्माण मामले में केंद्र सरकार का बड़ा कदम

राम मंदिर निर्माण मामले में केंद्र सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। मामले में केंद्र सरकार भी सर्वोच्च न्यायालय में पहुंच गई है। केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करते हुए अयोध्या विवाद मामले में विवादित जमीन छोड़कर बाकी जमीन को लौटाने और इस पर जारी यथास्थिति हटाने की मांग की है सरकार ने 67 एकड़ जमीन में से कुछ हिस्सा सौंपने की अर्जी दी है ताकि गैर विवादित जमीन पर मंदिर निर्माण शुरू हो सके।

उल्लेखनीय है कि मामले में 313 एकड़ भूमि को लेकर विवाद है, जिसमें सीता रसोई और रामलला जहां पर वर्तमान में विराजमान हैं। सरकार के कदम का विश्व हिन्दू परिषद् ने भी स्वागत किया। विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने सरकार के कदम का समर्थन किया है।
67 एकड़ जमीन 2.67 एकड़ विवादित जमीन के चारों ओर स्थित है। सुप्रीम कोर्ट ने विवादित जमीन सहित 67 एकड़ जमीन पर यथास्थिति बनाने को कहा था। 1993 में केंद्र सरकार ने अयोध्या अधिग्रहण एक्ट के तहत विवादित स्थल और आसपास की जमीन का अधिग्रहण कर लिया था और पहले से जमीन विवाद को लेकर दाखिल तमाम याचिकाओं को खत्म कर दिया था। एक्ट को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने इस्माइल फारुखी जजमेंट में 1994 में तमाम दावेदारी वाले सूट (अर्जी) को बहाल कर दिया था और जमीन केंद्र सरकार के पास ही रखने का निर्देश दिया था। विवाद में मुस्लिम पक्ष के वकील जफरयाब जिलानी का कहना था कि जब अयोध्या अधिग्रहण एक्ट 1993 में लाया गया, तब उसे चुनौती दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने तब यह व्यवस्था दी थी कि एक्ट लाकर सूट को खत्म करना गैर संवैधानिक है। पहले अदालत सूट पर फैसला ले और जमीन को केंद्र तब तक कस्टोडियन की तरह अपने पास रखे। कोर्ट का फैसला जिसके भी पक्ष में आए, सरकार उसे जमीन सुपुर्द करे। ❖

रैबीज़ पर होने वाला खर्चा कम करने के पीछे हैं ये पद्मश्री विजेता

शिमला के दीन दयाल उपाध्याय हॉस्पिटल में बतौर एपिडेमीयोलॉजिस्ट काम करने वाले डॉक्टर उमेश भारती। दुनिया भर में रैबीज से करीब 59000 लोगों की मौत हर साल होती है। अकेले इंडिया में करीब 20000 लोग इसकी चपेट में आते हैं। कारण वही है कि इसका इलाज इतना महंगा और जटिल था कि आम आदमी तक पहुंच ही नहीं पाता था। कुछ हद तक लोगों में इसके बारे में जागरूकता की कमी और दूसरा अस्पतालों में इसके उपलब्ध न होने के चलते आम लोग मरते थे। मगर साल 2014 में जब WHO की नई गाइडलाइंस आईं कि कुत्ते या बंदर के काटे हुए मरीज को उसके शरीर के वजन के हिसाब से जख्म पर लगाना और मसल में इम्युनोग्लोबिन इंजेक्ट करना है, तो इससे मार्केट में ये दवा ही खत्म हो गई। इंडिया में क्राइसिस की स्थिति पैदा हो गई। प्राइवेट प्लेयरों ने दवा अपने स्टॉक में रख ली और सरकारी अस्पतालों में आने वाले मरीज इलाज के आभाव में मरने लगे. खुद मेरे सामने कोई दो-तीन लोगों ने जान दे दी। वो स्थिति मेरे लिए परेशान करने वाली थी।

डॉक्टर उमेश भारती ने बताया कि हिमाचल में अभी ये इलाज एकदम फ्री है और ये देश में पहला राज्य होने वाला है जो रैबीज-फ्री होगा। अपने इस योगदान पर उन्होंने बताया कि देश के दूसरे राज्यों को भी ये पॉलिसी जल्द से जल्द अपनाने की जरूरत है ताकि कोई भी रैबीज से न मरे। साथ ही ये पूछने पर कि उन्हें कैसे पता चला कि उनके इस काम को भारत सरकार पद्म श्री देकर सम्मानित कर रही है, डॉक्टर उमेश ने बताया कि मुझे इस बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था। होम मिनिस्ट्री से कॉल आया और मुझे लगा कि कोई फ्रॉड कॉल है। उन्होंने पदमश्री के लिए मेरी सहमति ली। मैं खुश हूं और आगे भी जनसेवा में इसी तरह के काम करता रहूंगा। ❖

महिला उद्यमिता की शक्ति की पहचान

-ज्योत्सना सूरी

इक्कीसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने न सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बल्कि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अभिकर्ताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है।

विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्पादन के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

मैं इस बात में पूरी आस्था रखता हूं कि किसी भी कार्यदल के नेता के पास लक्ष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण एवं रणनीति बनाने की क्षमता होनी चाहिए तथा लक्ष्य को हासिल करने हेतु कार्यदल को अति सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने प्रयासों को मूर्तरूप देने में प्रभावी नेतृत्व करना चाहिए। नेता को पक्षपात रहित एवं धैर्यवान होना चाहिए तथा उसकी क्षमताओं को समझते हुए एवं तदनुसार उत्तरदायित्वों का प्रत्यायोजन करते हुए जन प्रबंधन कौशल होना चाहिए। उसे अपने दृढ़ लक्ष्यों के प्रति अडिग रहना चाहिए। उसे अपने कर्मचारियों का मनोबल काफी बढ़ाकर रखना चाहिए और संगठन को संकट के भंवर से बाहर निकालना चाहिए।

मैंने हाल ही में फिक्की के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया है और यह पहली बार है कि पर्यटन एवं आतिथ्य सत्कार सेक्टर का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। अध्यक्ष की अपनी मौजूदा हैसियत में, मैं पर्यटन को बढ़-चढ़कर बढ़ावा दे रहीं हूं। फिक्की में, हम लोग भारतीय उद्योग के संवर्धन हेतु अनेक समारोहों एवं पहलों के आयोजन में व्यस्त हैं। इनमें एक विषय है, जिसके प्रति मेरा काफी आत्मीय जुड़ाव है, - महिला उद्यमिता।

अप्रैल 2013 में, फिक्की महिला संगठन उद्यमिता उपाधि प्राप्त 150 महिला उद्यमियों की कहानियों का एक संकलन प्रकाशित किया। ये कहानियां हमें यह बताती हैं कि कैसे इन महिलाओं ने संघर्ष करते हुए, बाधाओं से लड़ते हुए उद्यमिता के जगत, पुरूषों के आधिपत्य वाले उद्यमिता जगत, में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति एवं स्थान दर्ज कराने में सफल हुई हैं। प्रत्येक कहानी महिलाओं के अटूट साहस, दृढ़ प्रतिज्ञा तथा स्त्री शक्ति के अद्भुत सामर्थ्य को सही अर्थों में प्रतिबिंबित करती है।

जब कभी भी मैं इन कहानियों को पढ़ती हूं, मैं काफी प्रेरित एवं अनुप्राणित महसूस करती हूं। ये कहानियां मुझे मेरी महिला उद्यमिता के रूप में प्रयासों का स्मरण कराती हैं। 10 अक्टूबर, 2006 को, मेरे जीवन में बड़ा भूचाल आ गया जब मेरे पति का स्वर्गवास हो गया। मेरे पति के गुजर जाने के 10 दिनों के भीतर मुझे इस कंपनी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभालना पड़ा। मेरे परिवार के लोग तथा मेरे इस कंपनी के कर्मचारीगण मेरी ओर टकटकी लगाए हुए थे और मुझे उनके लिए एक बड़े उत्तरदायित्व को निभाना था। मैं कार्य में इस कदर व्यस्त हो गई कि मेरे पास विलाप का भी समय नहीं था। मेरे लिए, प्रत्येक कदम पर सब कुछ नया था और सीखने वाला था। हालांकि आतिथ्य सत्कार की अवधारणाएं हमारे मन-मानस में स्वत: अंतर्निहित होती हैं, लेकिन इस संबंध में अपेक्षित पेशेवर प्रशिक्षण नहीं था। मैंने काम करते-करते इसे सीखा और अभी भी सीख रही हूँ। ❖

कैंसर के लिए रामबाण है जापानी मशरूम शटाके

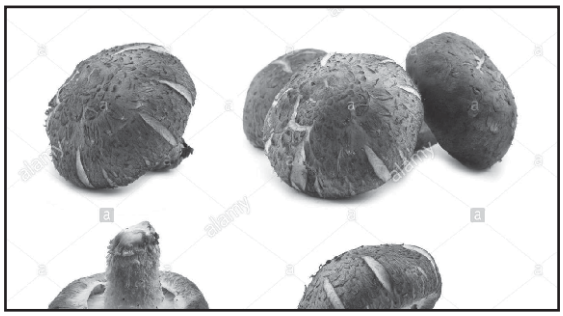

जापान, चीन व दक्षिण कोरिया के लोगों का पसंदीदा शटाके मशरूम प्रदेश में भी उगाया जाएगा। हिमाचल के इस मशरूम को विदेशी मार्केट मिलेगी, जिसके लिए सरकार ने प्रयास शुरू कर दिए हैं। इस मशरूम को विदेशों में निर्यात किया जाएगा, जिसकी बड़ी संभावना देखी गई है। ये संभावनाएं देखने के बाद सरकार ने निर्णय लिया है कि प्रदेश में भी शटाके मशरूम की खेती बढ़ाई जाए। कृषि विभाग के अनुसार अभी तक प्रदेश में शटाके मशरूम नहीं उगाया जाता और इसकी सबसे अधिक संभावनाएं पालमपुर क्षेत्र में हैं। वहां बाण के पेड़ों के साथ इसकी खेती की जा सकती है, जो बहुतायत में वहां उत्पादित हो सकता है। यह मशरूम की एक किस्म है, जिसे शटाके मशरूम कहा जाता है। जापान, चीन व दक्षिण कोरिया देशों में इसे बेहद पसंद किया जाता है, जो कि दुनिया में शटाके मशरूम की सबसे बड़ी मार्केट है। हाल ही में प्रदेश से अधिकारियों की एक टीम जापान के दौरे पर गई थी, जहां शटाके मशरूम पर विस्तार से चर्चा की गई। इसकी मार्केट देखी गई और इसकी खरीद करने वाली कई कम्पनियों के साथ चर्चा की गई है। इन विदेशी कंपनियों ने कहा है कि उनके पास शटाके मशरूम की बेहद डिमांड है और यह डिमांड पूरी करने में प्रदेश उनकी मदद कर सकता है। अच्छी बात यह है कि विदेशी मार्केट मिलने से उत्पादकों को बेहतर दाम मिलेंगे और यह चिंता नहीं रहेगी कि उनका उत्पाद बिकेगा या नहीं। उत्पादकों की यह समस्या दूर करने के लिए जापान से आयात कंपनियों के प्रतिनिधियों की एक टीम आगामी कुछ दिनों में हिमाचल के दौरे पर आने वाली है। उनका दौरा तय हो गया है, जो यहां आकर शटाके मशरूम की संभावना देखेंगे। ये लोग पालमपुर क्षेत्र का दौरा करेंगे, जहां कृषि विभाग इस मशरूम को लगाने पर जोर दे रहा है। यहां इसका उत्पादन भी कुछ क्षेत्र में शुरू कर दिया गया है। अब वहां लोगों को जागरूक करने की जरूरत है, जिसके लिए कृषि विभाग मुहिम चलाएगा। एक प्लान इस प्राजेक्ट को सफल बनाने के लिए तैयार किया जा रहा है।

पिछले दिनों मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव और कृषि विभाग के प्रधान सचिव जापान गए थे, जिन्होंने वहां कंपनियों से इस पर चर्चा की है। जनवरी में वहां की टीम को हिमाचल आने का न्यौता दिया गया है, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है। यहां और किन-किन क्षेत्रों में शटाके मशरूम उगाया जा सकता है, इस पर भी कृषि महकमा काम कर रहा है। ❖

स्वतंत्रता संग्राम को दर्शाते संग्रहालय का उद्घाटन

अभी अभी प्रधानमन्त्री मोदी जी ने '1857 के स्वतंत्रता संग्राम' को दर्शाते संग्रहालय का उद्घाटन किया। बहुत अच्छा लगा। लेकिन इसे 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहना उचित नहीं लगा। इस में वामपंथियों की शरारत भी हो सकती है। क्या इस से पहले राजा दाहिर, राणा सांगा, पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरू गोबिन्द जैसे हजारों महापुरुषों के साथ लाखों बलिदानियों के संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम नहीं थे? क्या यह कहने का प्रयास हो रहा है कि इस से पहले मुगल शासन आदि भारत को गुलाम बनाने के प्रयास नहीं थे? क्या इसे 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहना इस से पूर्व के स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान नहीं है ? मेरा भारत सरकार से निवेदन है कि 'प्रथम' शब्द हटा कर इसे केवल 1857 का स्वतंत्रता संग्राम कहा जाना अधिक उपयुक्त होगा। मेरा सब से निवेदन है कि इस विषय को इतना उठाया जाए कि आवश्यक सुधार हो जाएँ। ❖

देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह सम्पन्न

सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा प्रकाशित देवपुत्र बाल मासिक के सप्तम देवपुत्र गौरव सम्मान 2018 का आयोजन देवपुत्र सभागार में सम्पन्न हुआ। पटना के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी को विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी एवं प्रख्यात साहित्यकार लीला मेंहदले पुणे सहित देशभर से उपस्थित महिला बाल साहित्यकारों की सारस्वत उपस्थिति में मानपत्र, शाल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं सम्मान निधि भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर देवपुत्र द्वारा आयोजित विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान भी प्रदान किए गए। माया श्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार पद्मा चौगांवकर गंजबासौदा को उनकी बाल कहानी संग्रह 'सतरंगी कहानियाँ' के लिए प्रदान किया गया। डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्यकार पुरस्कार के विजेता डॉ. लता अग्रवाल एवं डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को प्रताप सम्मान, राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' को उनकी कृति क्रांतिकारी और उनके अमर पत्र के लिए सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन डॉ. विकास दवे एवं आभार प्रदर्शन प्रबंध न्यासी राकेश भावसार ने किया।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन भी देवपुत्र सभागार में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विविध सत्रों में डॉ. विमला भण्डारी, सलुम्बर राजस्थान, डॉ. लीना मेंहदले, पुणे महाराष्ट्र, पवित्रा अग्रवाल, हैदराबाद आंध्र प्रदेश, डॉ. इन्दुराव, गुरुग्राम हरियाणा, डॉ. प्रभा पंत, हल्द्वानी उत्तराखण्ड, सहित अन्य व स्थानीय महिला बाल साहित्यकारों ने संस्कारक्षम बाल साहित्य लेखन-लेखिकाओं की सहजवृत्ति, बाल साहित्य में उपदेश का निषेध कितना उचित?, बाल साहित्य में बालिका विमर्श को कितना स्थान?, आध्यात्मिक जीवन मूल्य देने में समर्थ लेखनधर्मी मातृशक्ति, ओजस्विनी/तेजस्विनी बालिकाएं कैसे साकार रहें? वर्तमान बाल साहित्य में सूखती वात्सल्य रसधारा जैसे विषयों पर सार्थक विमर्श सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन सत्र स्वामी विवेकानंद जी को समर्पित रहा। उनकी जयंती के उपलक्ष्य में शारदामठ इन्दौर की परिव्राजिका पूज्या अमितप्राणा माताएवं डॉ. विमला भण्डारी ने मार्गदर्शन दिया। कृष्ण कुमार अष्ठाना ने विवेकानंद जी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन के द्वितीय दिवस विभिन्न कृतियों का लोकार्पण किया गया। ❖

With best compliments from

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

सेना ने बारामूला जिला को बनाया आतंकी मुक्त

कभी आतंकियों (हिजबुल मुजाहिद्दीन) का गढ़ माना जाने वाला जम्मू कश्मीर का बारामूला जिला आज आतंक मुक्त घोषित हो गया है। 23 जनवरी को सेना के साथ मुठभेड़ में तीन आतंकियों के मारे जाने के बाद जम्मू कश्मीर के डीजीपी दिलबाग सिंह ने इस तथ्य की पुष्टि की। कश्मीर में तमाम परिस्थितियों को झेलने के बाद सेना और पुलिस की सफलता पर हम सभी को गर्व होना चहिये। बारामूला आतंक प्रभावित जिलों में से आतंक मुक्त होने वाला पहला जिला है। आशा है कि सेना व पुलिस की कार्रवाई का क्रम जम्मू कश्मीर को आतंक मुक्त बनाने के साथ ही पूरा होगा।

क्षेत्र में आतंकियों के छिपे होने की सूचना के बाद पुलिस ने सर्च ऑपरेशन चलाया। ये आतंकी चार घंटे से वहाँ छिपे हुए थे और सुरक्षा बलों को निशाना बना रहे थे। उन्हें पहले सरेंडर करने को कहा गया, लेकिन वे फायरिंग करते रहे। इन आतंकियों ने पहले भी कई बार बारामूला पुलिस पर ग्रेनेड से हमला किया था। कुछ दिन पहले घाटी के तीन युवकों को भी मौत के घाट उतार दिया था।

बारामूला के सफियाबाद में पुलिस, भारतीय सेना और CRPF ने एक संयुक्त ऑपरेशन में 3 आतंकवादियों को मार गिराया। मारे गए आतंकियों के पास से सुरक्षा बालों ने कई हथियार भी बरामद किए। ऑपरेशन में सेना की 46 राष्ट्रीय राइफल्स, 4 पैरा फोर्सेज, एसओजी और सीआरपीएफ के जवान शामिल थे। बारामूला लम्बे समय से आतंकवादियों की करतूतों के कारण चर्चा में रहा है। कभी बुरी तरह आतंक प्रभावित रहे इस जिले के सोपोर क्षेत्र में कई बार सुरक्षा बलों और आतंकवादियों की मुठभेड़ हो चुकी है। जिस उरी सैन्य कैंप पर आतंकी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया गया था, वो बारामूला में ही स्थित है।

घाटी में सेना ने आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन को जारी रखते हुए इस साल 23 दिनों में 14 आतंकियों को मार गिराया है। 12 जनवरी को हुई मुठभेड़ में अल-बद्र के खूंखार आतंकी जीनत को मार गिराया था। उसे IED बम एक्सपर्ट कहा जाता था। अगर पिछले साल के आँकड़ों की बात करें तो वर्ष 2018 में 28 दिसंबर तक जम्मू और कश्मीर में मुठभेड़ों में 253 आतंकी मारे गए थे। जम्मू कश्मीर राज्य के 22 जिलों में से लगभग 18-19 जिले मुख्यधारा में शामिल होकर विकास और शांति की राह पर हैं। यानि बचे हैं साउथ कश्मीर का अनंतनाग, पुलवामा, शोपियां और कुलगाम। जहां करीब 200 पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकी अभी भी बचे हुए हैं। लेकिन यहां भी 2018 में सुरक्षाबलों ने आतंकियों की कमर पूरी तरह तोड़ दी है।

जम्मू कश्मीर के डीजीपी ने विशेष जानकारी देते हुए पत्रकारों को बताया कि बारामूला जिले में बुधवार के ऑपरेशन में 3 आतंकी मार गिराए गए। इसी के साथ बारामूला कश्मीर का पहला आतंकी मुक्त जिला बन गया है, आज की तारीख में वहां एक भी जीवित आतंकी नहीं है। ❖

अब रिश्वत देने वालों को भी मिलेगी सजा

अब रिश्वत लेने वाले के साथ ही देने वाले को भी सजा मिलेगी। राज्यसभा में पास हो चुके नए भ्रष्टाचार निरोधक (संशोधन) विधेयक- 2018 को लोकसभा से भी मंजूरी मिल गई है। इस विधेयक के मुताबिक रिश्वत देने वाले को सात साल की जेल या जुर्माना या फिर दोनों सजा देने का प्रावधान किया गया है। विधेयक में रिश्वत लेने वाले के लिए कम से कम तीन साल और ज्यादा से ज्यादा सात साल का प्रावधान किया गया है।

लोकसभा में ध्वनिमत से भ्रष्टाचार निरोधक (संशोधन) विधेयक 2018 बिल को पारित कर दिया गया। संशोधन बिल में भ्रष्टाचार से जुडे मामलों को दो साल के अन्दर ही निपटाने का नियम बनाया गया है। यह विधेयक 1988 के भ्रष्टाचार निवारण कानून में संशोधन कर नया बिल पेश किया गया है। राज्य सभा में पहले ही इस बिल को मंजूरी मिल गई थी। विधेयक में सरकारी कर्मचारियों पर भ्रष्टाचार का मामला शुरु करने से पहले लोकपाल और राज्य के लोकायुक्त की अनुमति लेना अनिवार्य किया गया है। विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए प्रधानमन्त्री कार्यालय में राज्य मन्त्री जितेन्द्र सिंह ने कहा कि वर्तमान में इस बात का ध्यान रखा गया है कि ईमानदार अधिकारियों के अच्छे प्रयास बाधित न हों। ❖

कनाडा ने माना खालिस्तानी आतंकी हैं

आतंकवाद को लेकर कनाडा की नीति में बदलाव आ रहा है। वहां की सरकार ने पहली बार खालिस्तानियों को आतंकवादी माना है। वर्ष 2018 के लिए आई 'पब्लिक रिपोर्ट' में देश को खालिस्तानी आतंकवाद से खतरा बताया गया है। यह रिपोर्ट जस्टिन ट्रूडो सरकार में जनसुरक्षा मंत्री रॉल्फ गुडाले ने प्रस्तुत की है। रिपोर्ट में खालिस्तानी आतंकवाद की आशंका जताते हुए लिखा गया है- ''कनाडा में कुछ लोग चरमपंथी सिक्ख विचारधारा का समर्थन करते हैं, लेकिन यह समर्थन 1982 से 1993 की अवधि से कम है, जब खालिस्तान को लेकर आतंकवाद पूरे उफान पर था।' ये समर्थक आतंकवादियों को आर्थिक मदद देते हैं।' इस रिपोर्ट के अनुसार, ''कनाडा सबका स्वागत करने वाला और शांत देश है, लेकिन हर तरह की आतंकवादी-हिंसा के खिलाफ है। वह इस तरह की गतिविधियों को उखाड़ फैंकने के लिए भी तैयार है। कनाडा में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। अब आतंकी सोच और उसके समर्थन को खत्म करना कनाडा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल हो गया है।' पहली बार खालिस्तानी आतंकवाद के खतरे को प्रमुखता देते हुए रिपोर्ट में उसे अलग से स्थान दिया गया है। इसे सुन्नी, शिया और कनाडाई घुमंतू आतंकवादियों की तरह खतरनाक बताया गया है। ❖

पंज तीरथ पाकिस्तान में राष्ट्रीय धरोहर

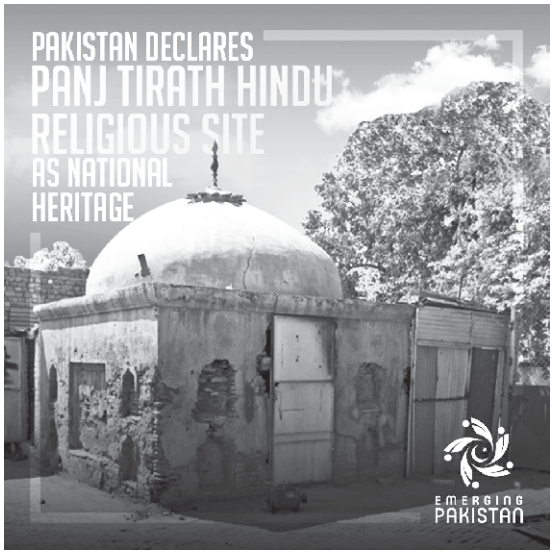

पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित खैबर पख्तूनख्वा प्रांत की सरकार ने पेशावर में स्थित प्राचीन हिन्दू धार्मिक स्थल पंज तीरथ को राष्ट्रीय विरासत घोषित किया गया है। साथ ही सरकार ने इस ऐतिहासिक महत्व के स्थल को क्षतिग्रस्त करने का दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति पर दो लाख रुपये का जुर्माना और पांच साल तक की सजा की घोषणा भी की है। इस घोषणा के उपरांत विरासत स्थल के पांचों सरोवर, चाचा यूनुस पार्क और खैबर पख्तूनख्वा चैंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्री के दायरे में आते हैं। मान्यता के अनुसार इस धार्मिक स्थल का संबंध महाभारतकालीन राजा पांडु से है। हिन्दू कार्तिक माह में यहां स्थित सरोवरों मे स्नान करने आते थे। ❖

सम्पादक के नाम पत्र लेखन सूचना

प्रतिमाह सम्पादक के नाम सर्वश्रेष्ठ पत्र लिखने वाले पाठक को मातृवन्दना संस्थान की ओर से 500 रुपये पुरस्कार राशि या प्रभात प्रकाशन दिल्ली से उपर्युक्त राशि की पुस्तकें भेंट की जाएंगी।

समाज से लुप्त होते नैतिक मूल्य नशे में डूबा युवा

-डॉ0 जयकरण

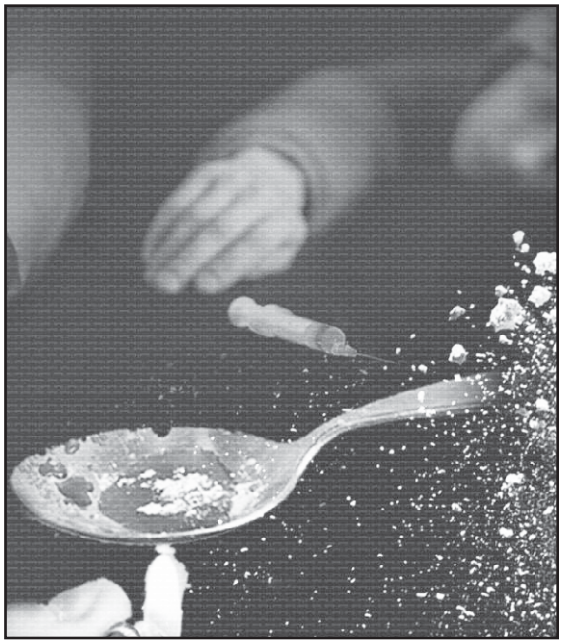

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु वृत्ति का प्राणी है। इस नाते वह कौतूहल और जिज्ञासाओं की पूर्ति में लगा रहता है। आज जिस तेजी के साथ समाज भौतिक प्रगति की सीढ़ीयां चढ़ रहा है उसी तेजी के साथ वह नैतिक रूप से नीचे की ओर जाता हुआ बुराइयों के चक्रव्यूह में भी फंसता नजर आ रहा है। आज समाज का युवा वर्ग दिशा भ्रम की स्थितियों में है। वह अपने लक्ष्य से हट कर कई तरह के नशे और दुर्व्यसनों का शिकार होता जा रहा है। ग्रामीण और शहरी समाज के युवा आज नशे के जाल में उलझ गए हैं। पड़ोसी राज्यों से प्रभावित हिमाचली युवाओं में भी नशे की समस्या एक चुनौती का रूप धारण कर गई है। यहां चौंकाने वाला तथ्य यह है कि नशे के आदि युवक ही नहीं, अपितु युवतियां भी पीछे नहीं हैं। आज प्रत्येक जाति, धर्म, समुदाय के युवा नशे की गिरफ्त में हैं। युवाओं के जीवन में नशे की घुसपैठ से अनेक तरह की विकृतियां जन्म ले रही हैं। नशे की समस्या एक गंभीर समस्या है, समाज के लिए यह एक गम्भीर चुनौती है।

विद्यार्थी जीवन तपस्या और संघर्ष का जीवन होता है। इन क्षणों में विद्या की देवी सरस्वती की आराधना के अलावा कोई लक्ष्य नहीं होता। पहले गुरूकुलों, आश्रमों में छात्रों के तनाव को कम करने के लिए तरह-2 के उपक्रम किए जाते थे लेकिन अब युवा ऐसे तनावों की मुक्ति नशे के पदार्थों में तलाशते हैं। यदि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जाएं तो ज्ञात होता है कि उस समय के विचारकों, साहित्यकारों और कवियों, ने भी इन दुर्व्यसनों की घोर निंदा की है। कथित आधुनिक कहे जाने वाले समाज में जितनी उन्नत्ति मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए हो रही है उससे अधिक अवनत्ति के मार्ग भी समुपस्थित हो रहे हैं। नई-2 तकनीकी खोजें आदमी के जीवन को सुखकर और गतिशील बनाने में सहायक हो रही हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश इस वरदान के साथ-साथ अभिशाप भी जुड़ा हुआ है। जहां तक बाल और युवामन की बात की जाए तो यह अवस्था जिज्ञासु भावना से लवरेज होती है। यही जिज्ञासु भावना और कुसंगति बच्चों को गलत कामों और आदतों में फंसा देती है। कहते हैं एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। वाली कहावत युवाओं पर हावी हो जाती है और देखा देखी में अपनी मित्र मण्डली के प्रभाव में नशावृत्ति में फंस जाते हैं।

किसी भी युवा का भविष्य कैसा होगा इसकी नींव छात्र जीवन में ही पड़ जाती है। कहां तो विद्यालयों और महाविद्यालयों के वातावरण और गुरूओं के सानिध्य में जीवन को दिशा देनी चाहिए और कहां हमारा युवा नशे के दुष्चक्र में फंसकर अपना जीवन प्रश्नचिन्ह के घेरे में डाल देता है। युवाओं का गलत संगत में फंसना कहीं न कहीं सामाजिक ढांचे की चरमराहट का प्रमाण है। अपने समाज में होने वाले सांस्कृतिक बदलावों से हमने कहीं न कहीं नैतिक पक्ष से समझौता कर लिया। जिस कारण समाज और परिवार से मिलने वाली संस्कार पूर्ण शिक्षा पीछे छूट गई। पारिवारिक ढांचा परिवेश और स्वरूप बदल गया फलस्वरूप युवा वर्ग को मिली स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता का रूप धारण कर रही है। शिक्षा की जहां तक बात की जाए तो वह नैतिकता से निरपेक्ष भाव बनाए हुए है। हमारी शिक्षा पद्धति आज भी मैकाले की मृत देह को ढो रही है। यदि शिक्षा में संस्कारों और नैतिकता की शुरुआत की जाएगी तो काले अंग्रेज और गुलाम सोच का प्रतिनिधित्व करने वाला वर्ग चिल्ल पौं मचा देता है। और सारे देश में संक्रमण की तरह व्याप्त कुछ मीडिया क्षत्रप धरती आकाश एक कर देता है। फिर चाहे देश का भविष्य, युवा नशे में जाए या भाड़ में। ❖

गुफा में चुप्पी छाई रही उसने फिर पुकारा अरी ओ गुफा, तू बोलती क्यों नहीं?

एक समय की बात है कि जंगल में एक शेर के पैर में कांटा चुभ गया। पंजे में जख्म हो गया और शेर के लिए दौड़ना असंभव हो गया। वह लंगड़ाकर मुश्किल से चलता। शेर के लिए तो शिकार करने के लिए दौड़ना जरूरी होता है। इसलिए वह कई दिन कोई शिकार न कर पाया और भूखों मरने लगा। कहते हैं कि शेर मरा हुआ जानवर नहीं खाता, परन्तु मजबूरी में सब कुछ करना पडता है। लंगड़ा शेर किसी घायल अथवा मरे हुए जानवर की तलाश में जंगल में भटकने लगा। यहां भी किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। कहीं कुछ हाथ नहीं लगा। भीतर शेर दम साधे बैठा था। भूख के मारे पेट कुलबुला रहा था। उसे यही इंतजार था कि कब सियार अंदर आए और वह उसे पेट में पहुंचाए। इसलिए वह उतावला भी हो रहा था। सियार एक बार फिर जोर से बोला ओ गुफा! रोज तू मेरी पुकार के जवाब में मुझे अंदर बुलाती है। आज चुप क्यों है? मैंने पहले ही कह रखा है कि जिस दिन तू मुझे नहीं बुलाएगी, उस दिन मैं किसी दूसरी गफुा में चला जाऊंगा। अच्छा तो मैं चला।

यह सुनकर शेर हड़बड़ा गया। उसने सोचा शायद गुफा सचमुच सियार को अंदर बुलाती होगी। यह सोचकर कि कहीं सियार सचमुच न चला जाए, उसने अपनी आवाज बदलकर कहा सियार राजा, मत जाओ अंदर आओ न। मैं कब से तुम्हारी राह देख रही थी। सियार शेर की आवाज पहचान गया और उसकी मूर्खता पर हंसता हुआ वहां से चला गया और फिर लौटकर नहीं आया। मूर्ख शेर उसी गुफा में भूखा-प्यासा मर गया। ❖

नकलची बंदर

नदी किनारे एक गांव था। गांव में एक बहुत ही गरीब आदमी सोमू रहता था। उसके परिवार में बेटा, उसकी पत्नी तथा बूढ़ी मां रहती थी। परिवार का पेट पालने के लिए वह रोजाना गांव-गांव, शहर-शहर जाकर टोपियां बेचता था और उसमें बचे मुनाफे से अपना जीवनयापन करता था। बड़ी मुश्किल से वह अपनी गृहस्थी की गाड़ी चला रहा था। एक दिन उसका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था उसे ठीक से नींद नहीं आई थी। फिर भी वह भारी मन से उठा और अपने साथ टोपियों की गठरी और एक छोटी-सी पोटली में खाना लेकर वह शहर की ओर निकल पड़ा।

रोजाना की तरह वह जंगल के रास्ते से होकर शहर की ओर जा रहा था, कि रास्ते में उसे जोरों की भूख लगी। वह एक घनी छायावाले पेड़ के नीचे बैठा। पोटली खोली और खाना खाया। उसका मन थोड़ी देर सुस्ताने का हुआ। यह विचार मन में आते ही उसने अपना गमचा बिछाया और उसके पास टोपियों की गठरी रखकर वह आराम करने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद लग गई। पास ही के एक बरगद के पेड़ पर बंदरों का एक झुंड बैठा हुआ था। उनमें से एक बंदर सोमू को सोया देखकर नीचे उतरा और गठरी पर रखी टोपी उठाकर अपने सिर पर रखकर वापस पेड़ पर जाकर बैठा। उसकी यह हरकत देखकर सभी बंदर एक-एक कर नीचे उतरे और गठरी की टोपियां निकाल कर अपने सिर पर लगाई और पेड़ पर जाकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद सोमू की नींद खुली। उसने देखा कि उसकी सारी टोपियां गायब हो चुकी है। वह घबराकर इधर-उधर देखने लगा। उसे कहीं भी कोई नजर नहीं आया। फिर उसकी नजर पास ही पेड़ पर मस्ती कर रहे बंदरों पर पड़ी। उसने देखा कि सारे बंदर अपने-अपने सिर पर टोपी लगाए हुए थे। उसे समझते देर न लगी। लेकिन अब करें भी तो क्या! वह यह सोच ही रहा था कि उसे एक युक्ति सूझी। उसने बंदरों की तरफ कुछ इशारा किया और अपने सिर पर हाथ फेरकर अपनी टोपी निकालकर नीचे जमीन पर फेंक दी। बंदर तो थे ही नकलची। उन्होंने भी अपनी-अपनी टोपी सिर से उतारी और जमीन पर फेंक दी। सोमू को भी इसी समय का इंतजार था। वह तुरंत उठा और जमीन पर पड़ी सारी टोपियां समेट कर अपनी गठरी में बांधी और बंदर कुछ समझ पाते इससे पहले वहां से गठरी लेकर चला गया। ❖

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. विश्व के किस देश में कोई भी मन्दिर नहीं है?

प्रश्न 2. विश्व का सबसे बड़ा महासागर कौन सा है?

प्रश्न 3. विश्व में सबसे कठोर कानून वाला देश कौन सा है ?

प्रश्न 4. मानव निर्मित कौन सी चीज अंतरिक्ष से स्पष्ट दिखाई देती है?

प्रश्न5. विश्व में सबसे अधिक वेतन किस राष्ट्रपति को मिलता है ?

प्रश्न 6. ऐसा कौन सा देश है जहाँ के डाक टिकट पर उस देश का नाम नहीं होता?

प्रशन 7. भारत का राष्ट्रीय पुष्प क्या है?

प्रशन 8. शिक्षक दिवस कब मनाया जाता है?

प्रशन 9. जापान पर परमाणु बम कब गिराया गया था?

प्रशन 10.किन दो स्थानों के बीच हिमसागर एक्सप्रेस चलती है?

पिछले अंक के उत्तर...

1. 1799 2. चार 3. [illegible] 4. मोदी 5. [illegible] 6. [illegible] 7. [illegible] 8. [illegible] 9. [illegible] 10. [illegible]

पहेली

1. लाल- लाल माँ, काले- काले बच्चे
   जहाँ जाऐ माँ वहां जाएं बच्चे?
2. सुबह-शाम मैं बोझ उठाता, ढेंचूं-ढेंचूं करता हूं
   पीछे मत तुम आना मेरे, मार दुलत्ती भगाता हूं?
3. ता-ता थैया कमर चलाए, खूब मजे कर नाच दिखाए बच्चों उसका नाम बताओ, जो सर्कस में हमे हंसाए?
4. आदि कटे, पानी बन बहता, मध्य कटे बन जाता काल, बुरी नजर से तुम्हें बचाता, यदि जो लगूं तुम्हारे गाल।
5. मिर्ची खाता, सब दोहराता, प्यार सभी का पाता हूं

उत्तर: रेलगाड़ी, गधा, जोकर, काजल, तोता

चुटकुले

1. जरूरत अपनी-अपनी!

पति (पत्नी) - अगर तुम्हें खाना बनाना आता तो मैं आया की छुट्टी कर देता।

पत्नी (पति से) - अगर तुम्हें प्यार करना आता तो मैं ड्राइवर की छुट्टी कर देती।

2. ईमानदार पापा!

चिंटू अपने पिताजी के साथ घूमकर लौटा और मां से बोला - मां मां, पापा को लड़कियों की तरफ देखना अच्छा नहीं लगता। जब भी सड़क पर कोई लड़की दिखती है, पापा अपनी एक आँख बंद कर लेते हैं।

3. शिष्टाचार!

रवीश: (माँ से) आज सुबह जब मैं पापा के साथ बस में आ रहा था तो उन्होंने एक आंटी के लिए मुझसे अनपी सीट छोड़ने को कहा।

माँ : बेटा यह तो अच्छी बात है। बड़ों का सम्मान करना चाहिए।

रवीश: मगर माँ, मैं तो पापा की गोद में बैठा हुआ था।

हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री

श्री जय राम ठाकुर

के कुशल नेतृत्व में

ईमानदार प्रयास का 1 एक साल विकास का

आईए अब सिर्फ

बेहतर कल की बात करें

प्रगति पथ पर हिमाचल सरकार

के साथ चलें

मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना

- युवाओं में उद्यमिता विकास व स्वरोज़गार सृजन की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल
- राज्य के आंतरिक एवं पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास
- प्रशिक्षण के लिए 62 कार्यों और सेवा क्षेत्रों को किया शामिल। औद्योगिक इकाईयां स्थापित करने के लिए आर्थिक एवं भूमि संबंधित प्रोत्साहन
- पूर्णतया राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित योजना
- 736 परियोजनाऐं ऋण के लिए प्रेषित 36 परियोजनाओं के लिए 8 करोड़ रूपये जारी

18-35 वर्ष आयु वर्ग के हिमाचली युवाओं को मिल रहा लाभ

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on:

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276